

अक्टूबर 2026

Retail Price ₹ 20

दादावाणी

आपके घर में
कलह है ?

वह तो चलते ही
रहते हैं।

अब, सचमुच में बुद्धिशाली किसे कहते हैं ? जो कलह बंद कर दे।
कलह होने की जगह पर कलह बंद करता जाए।
बुद्धि तो किसे कहते हैं कि एक भी मतभेद नहीं पड़ने दे।

अडालज : गुरु पूर्णिमा दर्शन : ता. 17 अगस्त से 6 सितम्बर 2026 के दौरान



अडालज : ज्ञानविधि : ता. 23 अगस्त 2026



वाराणसी : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 29 से 31 अगस्त 2026



वर्ष : 21 अंक : 12

अखंड क्रमांक : 252

अक्तूबर 2026

पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta

© 2026

Dada Bhagwan Foundation

All Rights Reserved.

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,

Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,

Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at

Amba Multiprint

Opp. H B Kapadiya New High

School, At-Chhatral, Tal: Kalol,

Dist. Gandhinagar - 382729

Published at

Mahavideh Foundation

Simandhar City, Adalaj,

Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,

पो.ओ.: अडालज,

जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : 9328661166-77

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:

+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

3 साल

भारत : 700 रुपये

वार्षिक

भारत : 240 रुपये

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउंडेशन’ के नाम

से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अकलमंद तो किसे कहेंगे ?

संपादकीय

जीव की उत्क्रांति में मनुष्य को सर्वोत्तम बुद्धिशाली और अकलमंद जीव माना जाता है। बुद्धि का उपयोग वह आधुनिक क्षेत्र में विज्ञान, टेक्नोलॉजी, समाज व्यवस्था, धन-दौलत जमा करने, प्रतिष्ठा प्राप्त करने आदि भौतिक प्रगति में करता है। मनुष्य की बुद्धि ने एक ओर भौतिक सुख के साधन तो दिए, लेकिन साथ ही दूसरी ओर आंतरिक शांति खोकर हम चिंता, असंतोष, दुःख अनुभव कर रहे हैं।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि जगत में मनुष्य के अलावा अन्य कोई जीव दुःखी नहीं है क्योंकि मनुष्य अपनी बुद्धि-अकल का उपयोग करके ‘एबव नॉर्मल’ विचार करके, चिंता में अपने हिताहित का भान भूलकर, दूसरों की नकल करके रेसकोर्स में दौड़-दौड़कर दुःखी होता है। जो अकल दुःख लाए, उस अकल को अकल ही क्यों कहा जाए? असली अकलमंद तो किसे कहा जाए, कि जो सच्ची समझ और ज्ञान से उपाधि को घटाए। प्राप्त को भोगकर और अप्राप्त की चिंता न करके, दुःख को विदा कर निरंतर सेफसाइड रखे।

दुनिया के लोगों ने अहंकार को ही अपना धंधा बना लिया है। मेरी बुद्धि ज्यादा, मैं कुछ हूँ, मैं ज्यादा अकलमंद - इससे आत्मघात हुआ है। असली अकलमंद या बुद्धिशाली तो कौन कहा जाएगा? क्लेश-कलह खड़ा होने की जगह पर कॉमनसेन्स का उपयोग करके मतभेद टालकर ‘एडजस्ट एवरीथिंग’ के सिद्धांत को समझकर व्यवहार पूरा करे। बुद्धि तो आज का अनुभव है, जबकि ज्यादा सूझ पड़े उसे अकलमंद कहा जाता है, यह प्राकृतिक देन है! लेकिन अकल बढ़ जाए तो दिमाग ठिकाने नहीं रहता, बुद्धि हो जाता है। इसलिए बुद्धि को काटकर ओवरवाइज (जरूरत से ज्यादा समझदार) नहीं, बल्कि वाइज (समझदार) होने की जरूरत है।

कई बार हमें लगता है कि हम अकल या बुद्धि का उपयोग नहीं करेंगे तो लोग हमें ठग लेंगे। ऐसा अकल का युद्ध चलता है तब परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि हम इस अकल के युद्ध में नहीं पड़ते। कोई ठग जाए तब मैं धनभाग्य मानता हूँ क्योंकि मैं रिलेटिव में ठगा जाऊँगा तो मैं अपने रियल के रास्ते जा पाऊँगा। उसे ही असल अकलमंद कहा जाता है। हमारी अकल भौतिक में नहीं, अध्यात्म में होती है। हम अबुध हैं। बुद्धि रहेगी वहाँ तक पूरा समाधान नहीं होगा। कई अवतारों से खोज रहे थे, उस ज्ञानप्रकाश का उजाला इस भव में हुआ, इसलिए संपूर्ण समाधान के साथ असीम आनंद प्राप्त हुआ।

अक्रम विज्ञान स्वयं क्रियाकारी है। ज्ञान मिलने के बाद अपनी अकल का उपयोग करने की जरूरत नहीं है। हम बुद्धि की बात पाँच साल तक न मानें तो वह चली जाती है। व्यवहार में बुद्धि का उपयोग करने से ज्ञान में दखल होता है। अब मोक्षमार्ग में पाँच आज्ञा पालकर व्यवहार में खड़ी होने वाली डिस्चार्ज बुद्धि का निकाल करके वीतरागता विकसित करें, यही भावना।

जय सच्चिदानंद

अक़लमंद तो किसे कहेंगे ?

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिङ्ग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी ‘चंदूभाई’ नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सके। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

(सूत्र-1)

नापसंद और पसंद (विचार) वह नाम किसने दिए ? नाम इस अक़ल ने दिए हैं। अरे, अक़ल उसके विचार कर-करके साथ में उल्टे रास्ते पर ले जा रही है।

प्रश्नकर्ता : नापसंद विचारों को रोकने के लिए क्या करना चाहिए ?

दादाश्री : रोकना नहीं है। नापसंद विचार तो अपने आप आते रहेंगे, तब आनंद में रहना चाहिए हमें।

प्रश्नकर्ता : लेकिन तब हम ऊब जाते हैं न ?

दादाश्री : हमें ऊब क्यों आनी चाहिए ? नापसंद और पसंद नाम किसने दिए हैं ? नाम इस अक़ल ने दिए हैं। अक़ल का बोरा है लेकिन अगर बेचने जाएँ न तो चार आने भी नहीं मिलेंगे। कोई लेगा ही नहीं। क्योंकि सभी अक़ल के बोरे हैं, कौन लेगा ? पहले कहते थे कि अक़ल के बारदान आए हैं !

कहता है ‘यह नापसंद विचार और यह पसंदीदा विचार’। लेकिन जो विचार आपके लिए नापसंद है वह उसके लिए पसंदीदा विचार हो सकता है। ये जो अच्छे-बुरे विचार हैं न, वे आपकी सापेक्षता है। आपको जो विचार खराब लगते हैं वे दूसरे को अच्छे लगते हैं। बोलो अब, उसे अच्छा कहना चाहिए या बुरा कहना चाहिए ? आपको क्या लगता है ? विचार खराब

या अच्छे नहीं होते, ऐसा भेद तो हम डालते हैं। चाहे किसी भी तरह के विचार आएँ, मृत्यु के विचार भी आएँ, अपनी मृत्यु हो गई, ऐसा भी दिखाता है फिर। ऐसा भी विचार आता है कि ‘अगर एक्सिडेन्ट हो जाएगा तो ?’ तब कहना, ‘भाई, हमने नोट कर लिया, नोटेड।’ फिर दूसरा विचार आएगा, ‘सत्संग में जाएँ।’ उसे ऐसा कुछ नहीं है कि यही विचार आए। सभी तरह के विचार आते हैं। वह सब डिस्चार्ज हो रहा है। डिस्चार्ज को हमें देखते रहना है, उसमें झंझट नहीं करनी है। किसी के ताबे में नहीं हैं ये सारी बातें।

नापसंद विचार आने पर वह उतने समय तक अलग रहता है जबकि मनपसंद में तू फँस जाएगा। तो जब मनपसंद आए न, तब तन्मयाकार हो जाता है।

लोग तो अंदर ही अंदर परेशान होते रहते हैं, ‘मुझे खराब विचार आ रहा है।’ अरे, भले ही आए, वह विचार तो चला जाएगा न ! वह तेरा नहीं है। अन्वय संबंध नहीं है तेरा उससे।

ये विचार आते रहते हैं। ये विचार ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं। ज्ञेय-ज्ञाता का संबंध रखना चाहिए, चूकना नहीं चाहिए। ‘हम’ कौन हैं, उसका लक्ष रखना पड़ता है। उसमें कुछ करना नहीं होता न !

(सूत्र-2)

कहीं भी सेफसाइड तोड़ दे उसे अक़ल

कहेंगे ही कैसे? अक्ल किसे कहते हैं कि निरंतर सेफसाइड रखे।

देखो न, किस हद तक सोच लेता है! अगर एक महीने तक दुकान नहीं चले तो, 'दुकान का दिवाला निकल जाएगा। और फिर इस तरह से दिवाला निकलेगा, उसके बाद मेरी स्थिति ऐसी हो जाएगी', इस हद तक के विचार कर लेते हैं ये लोग! किस हद तक के विचार कर लेते हैं? तो एक व्यक्ति मुझसे कहने लगा, 'सोचे बिना तो चल सकता है क्या? सोचे बगैर दुनिया कैसे चल सकती है?' तब मैंने कहा, 'तू बॉम्बे सिटी में ड्राइवर की साथ वाली सीट पर बैठ जाए और ड्राइवर से कहे कि तू क्या-क्या सोच रहा है? अब वहाँ-वहाँ जाऊँगा, ऐसा करूँगा, वैसा करूँगा, ऐसे सोचता है? क्या करता है वह?' ऐसा कुछ भी नहीं सोचता। यानी हर एक व्यक्ति को कुछ हद तक का ही सोचना चाहिए, उसके बाद अपने विचारों को बंद कर देना चाहिए, स्टॉप ही कर देना चाहिए, हर बात में। तो जब मर जाने की बात हो तो हम तुरंत स्टॉप कर देते हैं लेकिन व्यापार में नहीं करते। आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : सही है, विचारों की भी कुछ हद होनी चाहिए।

दादाश्री : स्टॉप करना आता है। ऐसा नहीं है कि नहीं आता। ये तो रमणता करते हैं। अक्ल की बोरी चलाते हैं। बच्चा आज (मेरे साथ) झगड़ा कर रहा है तो मैं बूढ़ा हो जाऊँगा तब मेरा कौन? 'अरे भाई! इस हद तक का सोच लिया!' आज के दिन का ही, कल के बारे में सोचने को मना किया है भगवान ने। थिंक फॉर टुडे, नोट फॉर टुमोरो! (आज के लिए सोचो, कल के बारे में मत सोचो।) और वह भी कुछ ही चीजों में। गाड़ी में बैठा हो, तो फिर टकरा जाएगी तो क्या

होगा? टकरा जाएगी तो क्या होगा? छोड़ो न, ऐसा विचार बंद कर देना चाहिए। यह तो इस हद तक सोचता है कि दुकान का दिवाला निकल गया, उसके बाद में क्या स्थिति और उसके बाद में क्या स्थिति? शुक्रवारी में भीख माँगनी पड़ेगी। और फिर पत्नी से कहता है, 'भीख माँगनी पड़ेगी।' 'अरे, कहाँ से देख आया?' 'मैंने ऐसा सोच लिया' कहेगा।

यह सब तो अक्लमंदों का काम है! लाइसेन्स पूरा अक्लमंदों का ही तो! लेकिन यह अक्ल का बोरा! अब इसे अक्लखोर कैसे कहेंगे? अक्ल उसे कहते हैं कि निरंतर सेफसाइड रखे। जो कहीं भी सेफसाइड तोड़ दे उसे अक्ल कहेंगे ही कैसे? और अक्ल तो उस हद तक कर सकती है कि सेफसाइड को संभाल ले। मैं खुद जानता हूँ।

प्रश्नकर्ता : कुछ हद तक के ही विचार करने चाहिए।

दादाश्री : विचारपूर्वक करके फिर बंद! ये तो इतना धो देते हैं, इतना धो देते हैं और फिर ऐसा सोचते हैं। फिर बच्चों को ऐसी दृष्टि से देखते हैं। अभी से ऐसा करते हैं, 'तो बूढ़े होने पर क्या चाकरी करेंगे?' ऐसा आप जो सोचोगे न और बेटा देख ले तो वह अपने मन में आपकी आँखें पढ़ लेगा कि, 'ये मेरे लिए खराब सोच रहे हैं।' इसलिए फिर उसकी दृष्टि भी बदल जाएगी। ऐसे करते हुए... ये सारे झगड़े इसी के हैं न! विचारों की दखल से यह संसार खड़ा रहा है। यानी मनुष्य इतना समझ जाए कि कितना सोचना है तो बहुत हो गया, कई दुःख कम हो जाएँगे।

भगवान क्या कहते हैं कि पूर्वग्रह के सेवन से तेरी मृत्यु है, प्रिजुडिस से तेरी मृत्यु है। इस नेगेटिव ने तो मार दिया है लोगों को। नेगेटिव की तरफ झुकाव से ही मर गए हैं लोग।

(सूत्र-3)

जो अक्रल दुःख लाए, उस अक्रल को अक्रल कहा ही कैसे जाएगा? हो उस दुःख को भी विदा कर दे, उसे अक्रल कहते हैं।

किसी को पक्षाघात हो गया हो, ऐसा देखे। तो उसे भी विचार आते हैं कि, 'अरे, मुझे पक्षाघात हो जाएगा तो क्या होगा, कहता है?' अब, अक्रलमंद को सोचने की ज़रूरत है क्या? अक्रलमंद ही सोचता है न! ऐसी अक्रल किस काम की? यह तो दुःख ही दुःख। मुझे पक्षाघात हो जाएगा तो मेरा क्या होगा? मेरा कौन? यह बेटा तो बोलता नहीं है, इकलौता है यह! सारी कल्पनाएँ कर लेता है।

मुझे भी पक्षाघात हो जाएगा तो', ऐसी अक्रल का उपयोग करते हैं। जैसे-जैसे अक्रल का उपयोग करते हैं वैसे-वैसे अंदर बहुत मज़ा आता है। है न? और यदि इस अक्रल का उपयोग नहीं हो तो कोई दिक्कत नहीं है! फिर नींद नहीं आती बेचारे को! अरे, हुआ नहीं है तो फिर क्यों ऐसा सोचते हो? इसे कहते हैं अग्रसोच। अग्रसोच यानी क्या? जो नहीं हुआ है उसकी भी कल्पना करना। भविष्य में क्या होगा, यही ढूँढ़ता रहता है। साधु-संन्यासी, आचार्य सभी। भविष्य में क्या होगा? इसी (सोच) में पूरा पुरुषार्थ चला जाता है। वहीं पर उलझता रहता है। वह यहाँ पर खाने-पीने का नहीं खाता, और भविष्य में रहता है। 'छोड़ न अभी वहाँ क्या कर रहा है?'

प्रश्नकर्ता : 'क्या होगा?' उसके विचार दुःख देते हैं। बाकी, दुःख कहाँ है?

दादाश्री : दुःख नहीं है। इसीलिए तो हमने व्यवस्थित कहा है। तभी आप इस दुःख में से मुक्त हो बैठे हो, इसीलिए शांति हो गई

है न। तभी तो अपने सभी महात्मा मजे से बैठते हैं, देखो न! इन्हें समझा दिया है कि, 'व्यवस्थित है' इसलिए फिर दखल भी नहीं। आप व्यवस्थित को समझ गए हैं और अनुभव हो गया है कि वास्तव में व्यवस्थित ही है। फिर दुःख रहा कुछ भी? व्यवस्थित शक्ति की वजह से आप सब को शांति है, इसी वजह से तो सब जगह शांति है। व्यवस्थित नहीं होता तब तो नींद ही नहीं आती न? टेन्शन, टेन्शन! यही मैं ढूँढ़ रहा था पहले। कोई ऐसा ज्ञान होना चाहिए कि जिससे सभी लोगों को शांति रहे। आपके अहंकार और ममता दोनों चले गए हैं। और तभी चिंता रहित जीवन जी सकता है मनुष्य।

(सूत्र-4)

अक्रल का बोरा तो किसे कहते हैं? अंदर भरी हुई है कमअक्रल और ऊपर लिखा है अक्रल। माल निकालने पर सारी कमअक्रली निकल आती है। वर्ना, दुनिया में मनुष्यों को कहीं दुःख होते होंगे?

वास्तव में तो इस दुनिया में क्लेश जैसी चीज़ है ही कहाँ? क्लेश यानी नासमझी। जहाँ-जहाँ समझदारी नहीं है वहाँ क्लेश है और जहाँ-जहाँ समझदारी नहीं है वहाँ दुःख है। दुःख जैसी भी कोई चीज़ है ही नहीं। दुःख, वह तो समझदारी के अभाव का दुःख है।

दुःख, ये सब नासमझी का परिणाम है। खुद मन में ऐसा मानता है कि, 'मैंने यह समझ लिया, यह समझ लिया।' अरे, क्या खाक समझ लिया? समझा फिर भी पत्नी के साथ झगड़ा तो मिटता नहीं। कभी पत्नी के साथ झगड़ा हो जाए तो उसका भी तुझे निकाल करना नहीं आता। जिसे पत्नी के साथ हुए झगड़े का निकाल करना भी

नहीं आता, तब तक वह धर्म में भी क्या समझेगा? झगड़े का निकाल करना तो आना चाहिए न?

इतने बड़े-बड़े जज होते हैं, वे सात साल की सज़ा कर देते हैं। बाद में वे जज मुझे मिले थे। घर पर उनका पत्नी के साथ कुछ झगड़ा हो जाए तो वह केस अभी तक पेन्डिंग ही होता है। मैंने कहा कि, 'इस केस का पहले हल लाओ न! उस सरकारी केस का तो हर्ज नहीं है।' लेकिन इसमें किस तरह हल लाए? उसे समझ ही नहीं है न! पत्नी के साथ झगड़ा हो तो किस तरह हल लाना, उसकी समझ नहीं है न! मनुष्य समझता नहीं है कि इसका निकाल किस तरह करना है? तब टाइम उसका निकाल कर देता है। वर्ना अपने आप, अभी के अभी, तुरंत ही एडजस्ट कर लेना चाहिए, ऐसी समझ तो इन लोगों में नहीं है।

समझदारी तो ऐसी होनी चाहिए न, कि यह गड़बड़ हो गई है तो उसका हल क्या लाएँ? ऐसा क्यों होना चाहिए? ये सभी जानवर संसार चला रहे हैं। क्या उनके पत्नी-बच्चे नहीं हैं? उनकी भी पत्नी है, बच्चे हैं, सभी हैं। अंडों को इतनी अच्छी तरह सेते हैं। अंडे देने से पहले घोंसला तैयार कर लेते हैं। क्या उनमें यह समझ नहीं है? और ये समझ के बोरे! अक्रल के बोरे! जब इन्हें अंडे देने होते हैं तब अस्पताल ढूँढ़ते रहते हैं। अरे, घोंसला बना न! लेकिन ये अक्रल के बोरे अस्पताल ढूँढ़ते हैं और जानवर बेचारे अंडे रखने से पहले जान जाते हैं कि हमें अंडे देने हैं, इसलिए हमें घोंसला बनाना चाहिए। अंडे में से बच्चे होते हैं, फिर घोंसला तोड़ दें तो उन्हें हर्ज नहीं है, लेकिन उसे अंडे का तुरंत पता चल जाता है, जबकि इस दूषमकाल में (लोग) अक्रल के बोरे बन गए हैं! अक्रल का बोरा तो किसे कहते हैं? कि अंदर भरी हुई है कमअक्रल और ऊपर लिखा है अक्रल। माल निकालने पर सारी

कमअक्रली निकल आती है। नहीं तो दुनिया में मनुष्यों को कहीं दुःख होते होंगे? यदि जानवरों को दुःख नहीं है, तो मनुष्य को दुःख क्यों होना चाहिए?

(सूत्र-5)

लोग तो मुफ्त को सौदा मान बैठे हैं और फिर खुद अपने आपको अक्रलमंद कहते हैं। सब से महँगी चीज़ इस दुनिया में कोई हो तो वह 'मुफ्त' है। इसलिए मुफ्त को कभी भी छूना मत।

यदि तू मनुष्य हुआ है और यदि मनुष्य में भी दुःख मिल रहा है, तो तू मनुष्य कहलाएगा ही कैसे? तू तेरी बाउन्ड्री नहीं समझता, तेरी काबिलीयत क्या है वह नहीं समझता और लोगों के कहे अनुसार देख-देखकर चलता रहता है और आमने-सामने नकल करता है। नकल तो बंदर करते हैं। मनुष्य नकल नहीं करते हैं, असल करते हैं। खुद की समझ से असल करते हैं कि मेरी हैसियत कितनी? मुझे चार सौ रुपये तनखाह मिलती है, जबकि पड़ोसी की हैसियत कितनी है? तो कहे, 'महीने में दस हजार कमाता है।' इसलिए हम उसकी बात को यहाँ पर घुसने ही नहीं दें।

यह तो खुद के अहित में चल रहा है कि पड़ोसी सोफा ले आए, तब घर में पत्नी क्या कहती है कि, 'हम भी सोफा लाएँ।' अरे, पत्नी तो कहेगी कि सोफा लाओ, लेकिन पत्नी को पूछोगे नहीं कि, 'तुझे मेरी अर्थी निकालनी है क्या?' लेकिन पत्नी को समझाना नहीं आता बेचारे को, कि पत्नी को किस तरह समझाऊँ और फिर पत्नी की आदत बिगाड़ता है। क्योंकि पति होना ही नहीं आया। ऐसे फिर पत्नी को बिगाड़ता है और अपने खुद के मन को भी इन लोगों ने

बिगाड़ा है। खुद ही मन को बिगाड़ता है और फिर कहता है कि, 'मेरा मन मेरी सुनता नहीं है।' अपने मन को कौन बिगाड़ता है? ऐसा तो भान ही नहीं है कि ऐसा करूँगा तो मन बिगड़ जाएगा या सीधा चलेगा? यह तो क्या कहेगा कि मुफ्त में मिल रहा है न, हेवमोर आइस्क्रीम मुफ्त में मिल रही है न? चलो! अरे, मुफ्त में मिल रहा है, लेकिन उसमें तेरा मन बिगड़ जाता है न। जब वह मुफ्त का चला जाएगा, फिर तेरी क्या दशा होगी? कुछ लोगों को तो अगर मुफ्त में मिले न, तो ब्रांडी का चस्का लग जाता है। पहले मुफ्त में शुरू करता है और फिर लत लग जाती है। इसलिए पहले तो लोगों को समझना चाहिए कि इस संसार में कुछ भी मुफ्त में लेने जैसा है ही नहीं।

महँगी से महँगी, बहुत ही जोखिम वाली ऐसी महँगी चीज़ को अपने यहाँ नहीं घुसने देना चाहिए। मुफ्त तो बहुत बड़ी जोखिमदारी है। सब को कहता फिरेगा कि, 'हमने कोई पैसे-वैसे खर्च नहीं किए, ये तो मेरे दोस्तों ने ही खर्चे हैं।' अरे, तू मर रहा है। लेकिन उसका भान ही नहीं है न! आज मनुष्यों को किसी भी प्रकार का भान ही नहीं रहा। मोक्ष का भान नहीं रहा, उसमें तो हर्ज नहीं है। मोक्ष का भान तो नहीं है, पहले से ही नहीं है, लेकिन संसार में हिताहित का भान चाहिए या नहीं चाहिए? संसार में मेरा किस तरह से हित होगा किस तरह अहित होगा, इतना भान तो होना चाहिए या नहीं?

(सूत्र-6)

अक़ल तो किसे कहते हैं कि जिसने कभी भी किसी की नकल नहीं की हो।

हिताहित का भान तो प्रत्येक को अपना स्वतंत्र होना ही चाहिए कि क्या करने से मैं सुखी

और क्या करने से मैं दुःखी हो सकता हूँ। हिताहित का स्वतंत्र भान नहीं है इसलिए नकल करने जाता है, मगर नकल किसकी करनी चाहिए? अक़लमंद की। अक़लमंद तो एक भी दिखाई नहीं देता, फिर किसकी नकल करेगा? जब तक 'मैं चंदूलाल हूँ' इस नकली भान में है, तब तक तू नकली है, असली नहीं है। असल की नकल की जा सकती है। नकली की नकल करने से क्या होने वाला है? 'वास्तविक' समझ में आए, तब बात बने।

नकल कर-करके अक़लमंद बने हैं, उससे क्या भला होगा? जो किसी की भी नकल नहीं करें, उसे कहते हैं अक़ल। यह सारा तो नकल कर-करके सीखे हैं!

प्रश्नकर्ता : यदि किसी की भी नकल नहीं की हो, तो वे तो ज्ञानी ही कहलाएँगे न?

दादाश्री : नहीं, तो वह स्थिति कुछ अच्छी कहलाएगी। मैंने कभी भी नकल नहीं की थी, बचपन से ही नहीं की। आप अगर कुछ कर रहे हों और उसमें अगर मुझे कुछ उल्टा दिखाई दे तो मैं वह नहीं करूँगा, मैं अपना कुछ अलग करूँगा।

प्रश्नकर्ता : जब ऐसी स्वतंत्रता होगी तभी ऐसी स्थिति आएगी न?

दादाश्री : हाँ। वह चाहे कुछ भी हो, अंदर ऐसा कुछ अलग करते थे, भेदांकन किए बिना नहीं रहते थे। अंदर ऐसा अवगुण था कि अगर यहाँ से यह रास्ता इस तरफ ले आए और वह उधर से घूमकर आए तो मेरी आदत ऐसी थी कि लोगों के खेतों में से होकर मैं सीधा जाता था लेकिन घूमकर जाने की आदत नहीं थी।

इस दुनिया में असली अक़लमंद तो थोड़े ही हैं, बाकी सब तो नकली हैं। बाकी नकली अक़लमंद हैं। कैसे हैं?

प्रश्नकर्ता : नकली।

दादाश्री : और मेरी तो दरअसल अकल थी। नई ही खोजबीन होती है मेरी तो! ज्ञान ही सिर्फ असली होता है, बाकी सब नकली है। जिंदगी में कभी किसी की नकल करनी ही नहीं चाहिए। मगर आज तो सोते हैं, उसमें भी नकल, चलने में भी नकल, अरे! बैठने तक की भी नकल ही करते हैं न! कमअकल वाले ही नकल करते हैं और दुःखी होते हैं। हमें तो नकल नहीं असल होना चाहिए।

(सूत्र-7)

चिंता हो, ऐसी जगह पर निश्चिंत रह सके, उसे कहते हैं 'विज्ञान'! लोग तो 'ईजी चेयर' पर बैठकर भी 'अनईजी' दिखाई देते हैं!

भगवान ने कहा था कि असुविधा में सुविधा खोज निकालना। असुविधा में ही सुविधा होती है। परंतु खोजना आए तब न?

सोफा पाँच साल पुराना हो जाए तो मालिक को वह असुविधाजनक लगने लगता है। ओल्ड टाइप (पुरानी शैली) का हो गया है, ऐसा लगता है। यह तो सुविधा में असुविधा पैदा की। आजकल तो ईजी चेयर में बैठकर लोग अनईजी रहते हैं। अरे, पूरी जिंदगी में एक ही दिन अनईजी होना होता है पर यह तो दिन भर अनईजी रहता है। सारा दिन क्लेश करता ही रहता है। इस मुंबई में भरपूर सुख पड़ा है पर यह तो सारा दिन दुःख में ही पड़ा रहता है।

एक सेठ आए थे। वे मुझसे कहते हैं, 'मैं तो ईजी (आराम) कुर्सी लाया हूँ।' जब मैं वहाँ गया तब तो वे ईजी कुर्सी पर अनईजी हुए बैठे थे। मैंने कहा, 'इस बेचारे ईजी कुर्सी का क्या दोष? आप ही अनईजी हो न!' ऐसे लोग

हैं। कुर्सी तो ऐसे-एसे होती, वैसी अच्छी खासी थी। (दादा एक्शन करते हैं।) पैर ऐसे होते, वैसे होते। लेकिन वह खुद अनईजी, उसमें वह कुर्सी बेचारी क्या करे?

प्रश्नकर्ता : दादा, ज्ञान सब है, कुछ बाकी नहीं। अप्रोपिएट (उचित) जवाब मिलता है इसमें। ज़रा भी कोई इधर-उधर नहीं कर सकता, एकदम सटीक!

दादाश्री : ऐसा है न, ज्ञान नहीं था तब भी सब से पहले ईजी चेयर नवसारी में बनवाई थी। वह अच्छी खासी थी। इस तरह पैर भी, पैर की ये पिंडलियाँ दबें ऐसे काफी देर तक बैठा जा सके। ऐसे हो, वैसे हो, ऐसे हो, वैसे हो। मैंने कहा, 'बनवाते हैं हम।' तो नाइन्टीन थर्टी सेवन में (1937 में) बनवाई थी। मुझे एक कारीगर बहुत अच्छा लगा था इसलिए मैंने बनवाई। फिर भी हमारे भागीदार जब बैठे तब अनईजी दिखें। तब मुझे गुस्सा आया। मैंने कहा, 'किस तरह का चक्कर (बेवकूफ) है, अरे! ईजी चेयर है न!' उस दिन के ये शब्द आज भी (याद) हैं अभी तक। अरे! 'चेयर ईजी है न, तो आराम से बैठो न।' अगर व्यापार में घाटा जाएगा तो फिर बहीखाते में घाटा जाने वाला है। क्या, अभी यहाँ कुर्सी पर घाटा है?

प्रश्नकर्ता : दादा, वह थोड़ा मुश्किल है, आसान नहीं है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन कुर्सी क्या करे बेचारी? कुर्सी ईजी है। फिर ईजी चेयर को बहुत बुरा लगता है। कुर्सी को ऐसा लगता है कि यह किस प्रकार के व्यक्ति है, मुझे अनईजी कर दिया! हमारा रोग उसे लग जाता है। फिर कुर्सी ऐसे-वैसे झूलती नहीं, जैसी है वैसी रहती है।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है, दादा।

दादाश्री : हाँ.. और फिर मैं उसे बैठकर दिखाता था। मैंने कहा, 'देखो ऐसे, ऐसे ये पिंडलियाँ-विंडलियाँ ठीक से दबती हैं, वह भी मजे से!' तो थकान-वकान सब उतर जाती है। पर हमारे भागीदार तो पिंडलियाँ दबाना हो तो किसी दिन दबाएँ, पर वापस उसी में चले जाते, घाटे में। अरे चक्कर, उसे क्यों याद करते हो? उसे छोड़ो न यहाँ से!

चिंता करने की जगह पर निश्चिंत रह सके, उसे विज्ञान कहते हैं! हमारे लोग तो ईज्जी चेयर पर बैठते हैं और अनईज्जी दिखते हैं। आपने देखा है, ये ईज्जी चेयर पर बैठे हुए अनईज्जी? कुर्सी का नाम ईज्जी चेयर और खुद अनईज्जी दिखता है। अरे, ईज्जी चेयर पर बैठा तो भी अनईज्जी कैसे हो गया? ईज्जी चेयर पर बैठे तो भी अनईज्जी हो जाए। अरे! उसमें कुर्सी की भी इज्जत बिगाड़ता है!

(सूत्र-8)

समझदारी तो किसे कहेंगे कि सामने वाले की अक्लमंदी वाली बात को एक्सेप्ट कर ले। इस काल में अक्लमंदी वाली बात कहाँ से होगी?

देखो न, पचास हजार के हीरे, उन्हें ले जाने वाला आराम से पहनता है और यहाँ सेठ चिंता करते रहते हैं!

सेठ के हीरों के पैसे नहीं आए हों फिर भी क्या सेठानी कोई चिंता करती है? तो क्या, वह पार्टनर नहीं है? बराबरी की पार्टनरशिप में है। अब सेठ कहता है कि, 'उसे हीरे दिए लेकिन (वह) उनके पैसे नहीं देता।' तब सेठानी क्या कहती है कि, 'हमारा कर्म होगा तो, नहीं आने होंगे तो नहीं आएँगे।' फिर भी सेठ के मन में होता है कि, 'यह नासमझ क्या कह रही है!' खुद अक्ल

का बोरा! उसने पचास हजार के हीरों के रुपये नहीं दिए तो खुद पच्चीस लाख की जायदाद में से पचास हजार कम करके साढ़े चौबीस लाख की जायदाद तय करनी चाहिए और तीन लाख की जायदाद हो तो पचास हजार कम करके ढाई लाख की जायदाद तय कर लेनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह समाधान पाने का कैसा अनोखा तरीका है। एकदम तुरंत समाधान हो जाएगा।

दादाश्री : यह तो तय कर लेना है, आसान रास्ता बनाकर! कठिन रास्ता ढूँढ़ने की क्या जरूरत है?

घाटे का व्यापार करने वाले को वणिक कैसे कहा जाएगा? घर पर अपने पार्टनर से पूछें, पत्नी को कि, 'यह पचास हजार का (नुकसान) गया तो आपको क्या कोई दुःख हो रहा है?' तब वह कहेगी, 'गए, यानी वे अपने नहीं हैं।' तब हमें नहीं समझना चाहिए कि, 'यह पत्नी कितनी समझदार है, मैं अकेला ही बेअक्ल हूँ', और हमें तुरंत पत्नी का ज्ञान स्वीकार कर लेना चाहिए न? ऐसी समझदारी की बात हमें पकड़ लेनी चाहिए या नहीं पकड़नी चाहिए? एक घाटा हुआ तो उसे जाने दें लेकिन दूसरा घाटा मोल नहीं लेते। लेकिन ये तो घाटा हुआ, उसीका रोना रोते रहते हैं! अरे, गया उसका रोना क्यों रोते हो? फिर से ऐसा न हो, उसकी चिंता कर। हमने तो साफ ऐसा ही रखा था कि जितना गया उतना कम करके रख दो!

(सूत्र-9)

भगवान ने पहले से ही कहा था कि प्राप्त को भोगो और अप्राप्त की चिंता मत करो।

मैं एक बार अहमदाबाद में एक सेठ के

घर गया। सेठानी ने मिष्ठान के साथ सुंदर रसोई बनाई। फिर मैं और सेठ भोजन करने बैठे। सेठानी सेठ से कहने लगी, 'आज तो ठीक से भोजन कीजिए'। मैंने पूछा, 'क्यों ऐसा कहती हो'? तब सेठानी बोलीं, 'अरे! यहाँ जो भोजन कर रहा है वह तो शरीर है और 'सेठजी' तो मिल में गए होते हैं! वे कभी भी ठीक से भोजन नहीं करते'। ऐसा क्या! अरे, यह थाली इस समय जो प्राप्त हुई है, उसे आराम से भोगो न? मिल अभी अप्राप्त है उसकी चिंता क्यों? भूत और भविष्य दोनों ही अप्राप्त हैं। वर्तमान प्राप्त है, उसे आराम से भोगो। अप्राप्त वह चीज़ आपके हाथ में नहीं है। आपको जब प्राप्त हो जाए, हाथ में आए तब उस चीज़ को भोगना।

एक सेठ का मरने का समय आया। वे हर तरह से धनवान थे। बच्चे भी थे चार-पाँच। वे कहते हैं, 'पिताजी, अब नवकार मंत्र बोलिए।' तब पिताजी कहते हैं, 'ये तो बेअक़ल हैं। अरे, यह बोलना मुझे नहीं आता क्या? मैं अपने आप बोलूँगा। तुम मुझे बार-बार कहे जा रहो हो!' तो बच्चे भी समझ गए कि पिताजी का चित्त इस समय कहीं और भटक रहा है। फिर सब बच्चों ने निष्कर्ष निकाला कि किसमें भटक रहा है? हमें पैसों का दुःख नहीं है, कोई और अड़चन नहीं है, लेकिन तीन बेटियों की शादी करवा दी थी और एक छोटी बेटी रह गई थी, तो सेठ का चित्त उस छोटी बेटी में ही लगा रहता था कि मेरी इस बेटी की शादी करवानी रह गई, अब इसका क्या होगा? तो बच्चे समझ गए, इसलिए छोटी बहन को खुद भेजा। वह कहती है, 'पापाजी, मेरी कोई चिंता मत कीजिए। अब आप नवकार मंत्र बोलिए।' तब पापाजी उससे कुछ बोले तो नहीं, लेकिन मन में ऐसा समझे कि यह अभी बच्ची है न! इसे क्या समझ?' अरे, जाने का समय आ

गया है, तो सीधा रह न! अभी घंटे-दो घंटे बाद जाना है, तो यह बेटी जो कह रही है वह कर न, नवकार मंत्र बोलना शुरू कर न! लेकिन क्या हो? किस तरह नवकार बोलें? क्योंकि उसके कर्म उसे सीधा नहीं रहने देते। उसके कर्म उसी घड़ी घेर लेते हैं!

यह तो मृत्युशैया पर पड़ा हो, तो भी छोटी बेटी की चिंता करता रहता है कि इसकी शादी करवानी रह गई। जाने का समय आया और लोग सचेत करते हैं, तो भाई, सीधे मर तो सही! और अभी, अब जाते समय शादी करवाने बैठे हो? जब अच्छा लड़का मिला था, तब शादी नहीं करवाई और अब शादी करवाने बैठे हो? इस छोटी बेटी की शादी नहीं कराई गई, उसी में जीव अटका रहता है उनका। चिंता करते-करते मरे तो फिर जानवर गति में जाता है। जानवर का जन्म अपमान से भरा है। लेकिन मनुष्य जन्म में भी सीधा न रहे तो क्या हो? यानी ये लोग जो सुख है, प्राप्त सुख, वह भी नहीं भोगते। जो सुख प्राप्त हुआ है, क्या वह नहीं भोगना चाहिए? वे प्राप्त को नहीं भोगते और अप्राप्त की चिंता करते हैं। यह सारी थ्योरी (सिद्धांत) ही रोंग (गलत) है।

(सूत्र-10)

पेशानी कम करे, उसे अक़ल कहते हैं!

हमारा कंपनियों में पहला नंबर आने लगा न, तब मन में पावर घुस गया कि यह तो दिमाग़ बहुत अच्छा काम कर रहा है। लेकिन तब तो, अक़ल नहीं थी, कमअक़ल था, पेशानी मोल लेने का संग्रहस्थान था। पेशानी कम करे, उसे अक़ल कहते हैं! हाँ, आने वाली पेशानी अपने पास न आए, बीच में कोई और ही वह ताज पहन ले तो वह पेशानी उसके पास चली जाएगी।

इन लोगों का तो तरीका ही गलत है, रिवाज़

ही पूरा गलत है! तो इन लोगों के रीत-रिवाज के अनुसार हम दौड़कर पहला नंबर लाए। उसके बाद भी वापस आखिरी नंबर आया, तो फिर मैं समझ गया कि यह दगा है! मैं तो वहाँ भी दौड़ा हूँ, खूब दौड़ा हूँ, लेकिन उसमें पहला नंबर आने के बाद फिर आखिरी नंबर आया था। तब हुआ कि, 'यह कैसा चक्कर है? यह तो फँसने की जगह है!' इसमें तो कोई हल्का आदमी जब चाहे तब अपने को मटियामेट कर सकता है। ऐसा कर देगा या नहीं कर देगा? पहला नंबर आने के बाद दूसरे दिन ही थका देता है! तब हम समझ गए कि इसमें पहला नंबर आने के बाद आखिरी नंबर आता है, इसलिए घुड़दौड़ (स्पर्धा) में उतरना ही नहीं है।

अब यह सब तो चलता ही रहेगा। उसमें खुद चलाता ही नहीं है। यह तो ज़रा गर्वरस चखने की आदत पड़ी हुई है न! इसलिए दूसरे की आठ सौ की तनखाह देखे न, तो मन में ऐसा होता है कि, 'हमें तो अठारह सौ मिलते हैं तो हमें कोई परेशानी नहीं है। इसे तो आठ सौ ही मिलते हैं!' यों शुरू हो जाता है! जैसे अठारह सौ के ऊपर कोई ऊपरी ही नहीं होगा न, ऐसा! जहाँ ऊपरी होता है न, वहाँ स्पर्धा रहती ही है! वहाँ खड़े रहने का कारण ही क्या है हमारे पास? यह क्या 'रेसकोर्स' में आए हैं? हम क्या 'रेसकोर्स' के घोड़े हैं? उसके बजाय तो वहाँ कह दे न, 'मैं बिल्कुल मूर्ख हूँ।' हम तो कह देते हैं न, कि 'भाई, हम में अक्ल नहीं है, हम में इस सारे व्यवहार की समझ नहीं है न!' और साफ-साफ ऐसी बात ही कर देते हैं न!

इसलिए हम तो यही एक शब्द कहते हैं कि, 'हम में अब बरकत नहीं रही।' बरकत तो

हमने देख ली! बहुत दौड़े, खूब दौड़े! यह तो मैं हिसाब निकालकर अनुभव से कह रहा हूँ। अनंत जन्मों से दौड़ा था, वह सब तो बेकार गया। 'टॉप' पर रहे, उस तरह से दौड़ा हूँ, लेकिन सभी जगह मार खाई है। इसके बजाय तो भागो न, यहाँ से! अपनी असल जगह ढूँढ़ निकालो, वाह.... जायजेन्टिक!

इस घुड़दौड़ में किसी का नंबर (हमेशा) नहीं लगा है। मैं इस घुड़दौड़ में नहीं उतरता। इस घुड़दौड़ में हाँफ-हाँफकर मर जाएँ तब भी किसी का नंबर नहीं लगा है। यों होता तो है अक्ल का बोरा! और अंत में हाँफकर मर जाए तब कहता है 'वह मुझे धोखा दे गया और वह मुझे धोखा दे गया'। अस्सी वर्ष की उम्र में भी तुझे धोखा दे गया! अनंत जन्मों तक इस रेसकोर्स में दौड़ता रहेगा फिर भी अंतिम दिन तू धोखा खाएगा, ऐसा है यह जगत्। सब बेकार जाएगा। ऊपर से बेहिसाब मार खाएगा। इसके बजाय तो भागो यहाँ से, अपनी असल जगह ढूँढ़ निकालो, जो अपना मूल स्वरूप है।

प्रश्नकर्ता : हमें कोई कुछ कहे, पागल कहे, बेअक्ल कहे, तो अच्छा नहीं लगता।

दादाश्री : ऐसा है न, आपको हँसना हो तो आटा नहीं फाँकना चाहिए और आटा फाँकना हो तो हँस नहीं सकते। दोनों में से एक करो। आपको मोक्ष में जाना है, तो लोग पागल भी कहेंगे और मारेंगे भी सही, सभी कुछ करेंगे लेकिन आपको अपनी पकड़ छोड़ देनी पड़ेगी।

जगत् की मिठास चाहिए और यह भी चाहिए, दोनों (एक साथ) नहीं होगा। जगत् में तो अगर कोई हराने आए न, तो हारकर बैठना चाहिए चैन से। लोग तो उनकी भाषा में जवाब देंगे। 'बड़े शुद्धात्मा हो गए हो?' ऐसी-वैसी सब

गालियाँ भी देंगे क्योंकि लोगों का स्वभाव ही ऐसा है। खुद को मोक्ष में जाने का मार्ग नहीं मिला है इसलिए दूसरों को भी नहीं जाने देते, ऐसा है लोगों का स्वभाव। यह जगत् मोक्ष में जाने दे ऐसा है ही नहीं, इसलिए इन्हें समझा-बुझाकर, आखिर में हारकर भी कहना कि, 'हम तो हार चुके हैं।' तब वे आपको छोड़ देंगे।

(सूत्र-11)

किसी को बेअक़ल नहीं कहना चाहिए, उसमें आत्मा है। इसलिए जोखिमदारी कितनी!

कोई गालियाँ दे तो कुछ होता है आपको?

प्रश्नकर्ता : अहंकार आहत हो जाए तो होगा तो सही न!

दादाश्री : अहंकार आहत हो जाता है? अहंकार आहत हो जाए तो अच्छा, उतना कम हो जाएगा। आहत होते-होते खत्म हो जाएगा न? अहंकार को ताजा रखना है आपको? फ़ेश? आपको अहंकार की बहुत ज़रूरत है?

प्रश्नकर्ता : वह तो अपने साथ रहता ही है न?

दादाश्री : हाँ, साथ में ही रहता है। वह निकलता ही नहीं है न! उसी की वजह से है यह सबकुछ है।

एक व्यक्ति फ्रेंच कट रखता था। वह यहाँ तक बाल रखता था। उस हेयरकटिंग सलून वाले से ज़रा ज़्यादा कट गया तो चिढ़ कर दो-चार थप्पड़ मार दिए! 'अरे, थोड़ा ज़्यादा कट गया तो उसमें क्या बिगड़ गया?' लेकिन यह अहंकार कैसे काम करता है न? आपका अहंकार ऐसा काम करता है। तूफान मचाता है? समझदार है न? किसी का अहंकार समझदार

होता है। किसी का अहंकार पागल होता है! उस अहंकार के बेसमेन्ट पर पड़े हुए हैं सब। लोगों को 'बेअक़ल' कहते हैं। और खुद अक़ल का बोरा! उससे बिल्कुल खत्म हो जाता है, पत्थर बन जाता है व्यक्ति! किसी को बेअक़ल नहीं कहना चाहिए, उसमें आत्मा है। इसलिए जोखिमदारी कितनी!

यह अहंकार तो क्रोनिक रोग कहलाता है। वह हमारे पास रहेगा तो निकलेगा, वर्ना लोग तो बल्कि बढ़ा देंगे वह रोग!

कोई कहेगा कि, 'इन चंदूभाई में अक़ल नहीं है', तो आप पर कोई असर होता है?

प्रश्नकर्ता : होगा तो सही न।

दादाश्री : क्यों? अक़ल के बोरे हो आप?

प्रश्नकर्ता : नहीं हैं इसीलिए हो जाएगा।

दादाश्री : और कोई कहे कि यह चंदूभाई कहाँ के कलेक्टर हैं? तब आप ऐसा कहोगे कि मैं कलेक्टर हूँ?

प्रश्नकर्ता : नहीं हैं तो कैसे कहेंगे?

दादाश्री : तब कलेक्टर कहने से असर नहीं होता और इसका असर क्यों हो जाता है? आप अंदर मान बैठे हो कि मैं कुछ हूँ, अक़लमंद हूँ।

प्रश्नकर्ता : उससे अहंकार आहत होता है।

दादाश्री : अंदर अहंकार आहत हो जाता है कि मैं कुछ तो अक़लमंद हूँ। अक़लमंद इतना ज़्यादा होता है कि वह दूसरों को रास्ता दिखा देता है, निकाल देता है। बोलो अब, ऐसे व्यापार किए! क्या बाकी रखा होगा? अक़ल के बोरे। यह मान दिया न, तो सब दे देते हैं। मान दे और कड़वा नहीं लगे तो उसे ज्ञान नहीं रहेगा।

कोई मान दे रहा हो न तो ज्ञान वाला व्यक्ति तो परेशान हो जाता है कि यह मान किसे मिल रहा है? चंदूलाल को मान मिल रहा है, चंदूलाल का क्या करना है? यानी कि इस रोग से तो बहुत बचकर रहने जैसा है।

इन लोगों ने धंधा ही अहंकार का लगाया है न! मेरी बुद्धि ज्यादा है, मैं इससे ज्यादा अक्लमंद हूँ! ऐसे आत्मघात हो रहा है।

आपको कोई कुछ कह जाए तो तुरंत ऐसा लगता है कि मैं कुछ हूँ। मैं तो पहले से ही अक्लमंद हूँ ऐसा मानते हैं। क्या कहते हो? आप ऐसा मानते हो क्या?

हम यदि लघु व्यक्ति हैं, तो आत्मघाती नहीं हैं। और यदि गुरु (बड़ा) बनने गया तो वह आत्मघाती हो जाएगा। अतः व्यवहार में गुरु बनकर कोई भी मोक्ष में नहीं गया है। व्यवहार में लघु हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है। पहले से ही खुद ऐसा मानता है कि मैं अक्लमंद हूँ, ऐसा ही हूँ। मुझे कोई क्या कह सकता है?

दादाश्री : ऐसा तो कभी-कभी ही होता है न?

प्रश्नकर्ता : दादा का ज्ञान नहीं लिया था तब ऐसा लगता था कि मुझे कोई क्या कह सकता है, अहंकार ऐसा था लेकिन अब सब एडजस्ट कर लेता हूँ।

दादाश्री : 'मैं होशियार हूँ', ऐसा रहता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ, रहता है।

दादाश्री : वह रोग सब से बड़ा है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अब बिल्कुल नहीं रहता।

दादाश्री : ऐसा नहीं, कभी-कभी ऐसा रहता है?

प्रश्नकर्ता : 'मैं होशियार हूँ', ऐसा तो नहीं रहता कभी, लेकिन मुझे कोई कुछ कह न जाए, बस ऐसी सावधानी रखी है।

दादाश्री : किसी के दबाव में नहीं आना है, ऐसा कुछ था न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, ऐसा तो था।

दादाश्री : 'मैं कुछ हूँ' ऐसा था न, वही रोग है। और उसी रोग के कारण टकराव होता है। ज्ञान मिलने के बाद भी यह रोग नहीं जाता है। यानी यह रोग अभी भी रहा हुआ हो तो निकाल देना! बाकी, यह ज्ञान मिलने के बाद भी यह रोग रहा करता है। फिर यदि हम 'उससे' कहें न, तो समझकर धीरे-धीरे यह रोग निकालता है। लेकिन यदि नहीं कहा हो तो अंदर रह जाएगा न! वह रोग निकल जाना चाहिए।

(सूत्र-12)

हमें अक्लमंद बनने की बात ही नहीं करनी है। इसीलिए तो हमने अबुध का कारखाना ढूँढ़ निकाला न!

हमारी अक्ल अध्यात्म में पहुँचती है, लेकिन भौतिक में नहीं पहुँचती। हमें भौतिक की समझ ही नहीं है न, ऐसी-वैसी। टेढ़ी समझ ही नहीं। यहाँ तो (कहे कि) कान पकड़ो, तो ये पकड़कर बैठ गए।

हम खुद ही बगैर अक्ल के हैं न! अबुध हैं! हम तो 'अबुध' हैं ऐसा पुस्तक में छापा भी है। मैं लोगों से कहता हूँ कि 'हम तो अबुध हैं!' तब लोग कहते हैं, 'ऐसा मत कहिए, मत कहिए!' अरे भाई, तू भी बोल। तू भी अबुध

बन, नहीं तो मारा जाएगा! लोग तो तेरे पैर तोड़ डालेंगे!

इसलिए हमें अक्रलमंद बनने की बात ही नहीं करनी है। इसीलिए तो हमने अबुध का कारखाना ढूँढ़ निकाला न! देखो न, कैसा ढूँढ़ निकाला! अरे, हमें जब व्यवहार में समझ नहीं आया तो वकील को ढूँढ़ निकालेंगे कि, 'ले रुपए, और कुछ करके दे। यह झगड़ा कर रहा है उसका हल ला दे,' कहेंगे। भला हम कहाँ अक्रल का उपयोग करते रहें? ऐसे अक्रलमंद लोग तो मिलते हैं न! कोई पच्चीस रुपये वाले मिलते हैं, कोई पचास रुपये वाले मिलते हैं, कोई सौ रुपये वाले मिलते हैं। आखिर में एक दिन के पाँच सौ रुपये वाले भी मिलते हैं न! तैयार ही मिलते हैं, तो फिर अक्रल का उपयोग क्यों करें? आपको समझ में आया न?

ये तो बहुत पुण्यशाली लोग हैं तो लोग ऐसा कह देते हैं कि 'अक्रल नहीं है'। यह बहुत अच्छा है। इसे तो इनाम कहते हैं। यह तो लोगों ने ही कीचड़ में गहरे नहीं उतरने दिया। 'अरे, रुक जा! भीतर मत उतरना, तू डूब जाएगा! कीचड़ में पैर धँस जाएँगे!' तब कहें, 'अच्छा!' इस किनारे पर खड़े रहे इसीलिए तो यह 'ज्ञान' पाया! वरना तो जो धँस चुके हैं न, उनके चेहरे तो देखो, सभी के! जैसे एरंडी का तेल पीया हो वैसे हो गए हैं। जो सयाने बनने, नाम कमाने गए थे वे!

प्रश्नकर्ता : लेकिन बाहर वाले हर बात में मूर्ख ठहरा देते हैं, वहाँ क्या करें?

दादाश्री : हाँ, तो हमें वही बनने की ज़रूरत है। हमारे बहुत पुण्य जागे हैं! और वहाँ पर उन लोगों में हमें एकदम हँसी-खुशी से नहीं रहना है, लेकिन दिखावा तो ऐसा ही करना है

कि हमें आपके साथ घुड़दौड़ में उतरना है, सिर्फ दिखावे के लिए ही! लेकिन अंदर से तो, अगर वहाँ चले जाएँ न, तो भी हार जाना चाहिए! तब उन्हें मन में ऐसा लगेगा कि 'हम जीत गए हैं'। हमने तो सामने से कितने ही लोगों को ऐसा कह दिया था कि, 'भाई, हम में बरकत नहीं है।' वह सब से अच्छा रास्ता है। बाकी तो यह सब घुड़दौड़ है! 'रेसकोर्स' है! वहाँ हम किसके साथ दौड़ें? 'नहीं है हम में कोई बरकत, नहीं है चलने की शक्ति,' वहाँ किसके साथ दौड़ेंगे? तब भी लोग कहेंगे, 'आपकी कहाँ अभी बहुत उम्र हुई है?' तब मैंने कहा 'लेकिन, अधिक उम्र वालों के साथ भी मुझसे नहीं दौड़ा जाता। हमें दूसरा कुछ तो आता नहीं है।' इस बेवकूफ की अक्रल का क्या करना है? जो अक्रल तो किराए पर मिलती है न!

देखो न, 'एक्सपर्ट' तो, जहाँ से ज़रूरत हो, वहाँ से किराए पर मिल जाते हैं। कहाँ के 'एक्सपर्ट'? तब कहते हैं, 'इन्कम टैक्स' के। वे भी किराए पर, दूसरा भी किराए पर, तीसरा भी किराए पर, डॉक्टर भी किराए पर, वकील भी किराए पर, सबकुछ किराए पर!

हर कोई व्यक्ति, अपनी-अपनी लाइन में होशियार होता है और बाकी लाइनों में सभी बेवकूफ होते हैं। उससे तो अपना अच्छा है, एक लाइन में बड़ा 'एक्सपर्ट' कहलाने के बदले सब में बेवकूफ! इसमें क्या अक्रल रखनी है? इसलिए तभी से हमने बात छोड़ दी थी न, लगाम ही छोड़ दी थी न! और कह दिया था, 'हमें समझ में नहीं आता।' इसलिए हम मुक्त!

अब अपने हाथ में पतंग आ गई। लोगों की पतंगों को गोते खाने होंगे तो खाएँगी, लेकिन अपनी पतंग की डोर तो हाथ में आ गई! हम इन

लोगों की घुड़दौड़ में कहाँ पड़ें ? 'सब-सबकी (मटकी) संभालो, मैं मेरी फोड़ लेता हूँ।'

इस अक्ल का करना क्या है ? आप यदि इसमें गहरे उतरे होते न, तो कितने ही गहरे धँस चुके होते लेकिन आप हमारी तरह दूर ही रहे, वह अच्छा हुआ !

जिसमें अक्ल है, उसका मोक्ष नहीं हो सकता। दुनिया जिसे अक्लमंद कहती है, वह तो बहुत ही कमअक्ल है। अक्लमंद खुद की ही कब्र खोदता है, उसे 'हम' कमअक्ल कहते हैं।

'मुझ में तो कोई बरकत नहीं रही अब,' जब ऐसा कहते हैं, तो लोगों को बहुत अच्छा लगता है। वर्ना बरकत वाले लोग तो यहाँ पर सौदा करने आ जाएँगे। अरे! यहाँ पर यह क्या सौदा करने की चीज़ है ? (हम) सब से ऊपर हैं ! सौदा तो तेरी काबिलीयत का कर ! हम तो ऊपरी के भी ऊपरी हैं और फिर बगैर बरकत वाले हैं ! इसलिए कह देते हैं, 'बगैर बरकत वाले में क्या ढूँढ़ रहे हो ?'

लोग तो बचपन में डाँटते थे कि 'तुझ में कोई बरकत नहीं है।' कोई और कहे उसके बदले तो फिर हम ही कह दें न ! किसी को कभी कुछ कहना पड़े, कोई 'सर्टिफिकेट' दे, उसके बजाय हम ही 'सर्टिफाइड कॉपी' बन जाएँ न, तो झंझट ही मिट जाएगी न ! लोगों को कहना पड़े कि, 'तुझ में बरकत नहीं है, तुझ में कुछ भी बरकत नहीं है !' और हम वह बरकत लाना चाहें तो इसका हिसाब कब मिलेगा ? इसके बदले हम ही 'सर्टिफाइड' बिना बरकत वाले हो जाएँ न ! तो हल आ जाए न !

(सूत्र-13)

पूरी दुनिया में यदि बुद्धि नहीं हो, ऐसा

कोई पुरुष ढूँढ़ना हो तो वह सिर्फ मैं ही हूँ।' 'मैं अबुध हूँ', ऐसा हमने स्वीकार किया है।

मुझ में एक बूँद भी बुद्धि नहीं है। मुझ में एक सेन्ट भी बुद्धि नहीं है, यह आपको समझ में आ रहा है क्या ?

प्रश्नकर्ता : इस बात को मैं स्वीकार नहीं करता।

दादाश्री : मुझ में एक सेन्ट भी बुद्धि नहीं है। सिर्फ मैं ही बिना बुद्धि वाला व्यक्ति हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह तो आपकी महानता है।

दादाश्री : नहीं, महानता मुझे नहीं चाहिए। मैं तो लघुत्तम हूँ। मुझे महानता नहीं चाहिए। फिर भी लोग देते हैं। अक्रम विज्ञानी किसे कहेंगे कि जिनमें सेन्ट परसेन्ट बुद्धि न हो। हम में एक प्रतिशत भी बुद्धि नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कैसे कहा जा सकता है ? वह मानने में नहीं आता।

दादाश्री : ऐसा है न, बुद्धि केवल फायदा-नुकसान ही दिखाती है। हम में बिल्कुल बुद्धि नहीं है, हम अबुध हैं ! हमने पुस्तक में साफ-साफ लिखा है कि हम अबुध हैं। क्या आप ऐसा लिख सकते हो ?

प्रश्नकर्ता : इज्जत का सवाल आ जाएगा उसमें तो।

दादाश्री : हाँ, इज्जत का सवाल ! जबकि मेरी तो इज्जत खत्म हो चुकी है इसलिए मैं लिखता हूँ कि हम अबुध हैं और पुस्तक में लिखा ही है। आपने पढ़ा नहीं होगा, नहीं ? नहीं पढ़ा ?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : हमने पुस्तक में साफ-साफ

लिखा है कि हम अबुध हैं। और अबुध ही हैं, वर्ना पुस्तक में लिखकर इज्जत क्यों बिगाड़ते? खुद अबुध है ऐसा पुस्तक में कौन लिखेगा? यदि किसी ने अबुध कहा हो तो गुस्सा आ जाता है।

बुद्धि क्या करती है? इमोशनल करती है। मुझ में नाममात्र भी बुद्धि नहीं है। इसीलिए तो मैं फायदे में रहा न! इस वर्ल्ड में सिर्फ एक ही व्यक्ति अबुध है बाकी सभी बुद्धिशाली हैं। अर्थात् ज्ञानी उन्हें कहेंगे कि जिनमें बिल्कुल, एक सेन्ट भी बुद्धि न हो।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि के बगैर ज्ञानी का व्यवहार कैसे चलता है?

दादाश्री : वही देखना है। फॉरेन के साइन्टिस्ट इस बात को नहीं मानते थे। मैंने कहा, 'आपको किस तरह मानने में आएगा यह? आपकी समझ में किस तरह बैठेगी यह बात?'

मैं कहता हूँ कि, 'मैं बुद्धि रहित हूँ।' तब लोग कहते हैं, 'नहीं, ऐसा नहीं बोलना चाहिए। अरे, ऐसा बोलते हो?' लेकिन बुद्धि नहीं है इसीलिए कह रहा हूँ। तब उसके मन में ऐसा लगता है कि, 'सभी बुद्धिशाली हैं, तो सिर्फ दादा ही बिना बुद्धि के हो सकते हैं क्या?' अरे, वे लोग बुद्धिशाली हैं, इसीलिए तो बुद्धू होने को बैठे हैं!

प्रश्नकर्ता : प्रथम दृष्टि में विरोधाभास लगता है।

दादाश्री : हाँ।

(सूत्र-14)

हम रिलेटिव में अबुध और रियल में ज्ञानी हैं!

किस वजह से लिखा है कि, 'हम में बुद्धि नहीं है?'

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह समझ में नहीं आता कि इससे आप क्या कहना चाहते हैं?

दादाश्री : मैं ऐसा कहता हूँ कि, 'मुझ में बुद्धि नहीं है', तो मेरे पास और कोई चीज़ होगी न? कोई प्रकाश तो होगा न मेरे पास? बुद्धि एक प्रकाश है और मेरे पास जो प्रकाश है, वह अलग तरह का प्रकाश है। हम में ज्ञान है, प्रकाश है।

कोई पूछ सकता है कि, 'आप बगैर बुद्धि के हैं तो आप यह सब कैसे जानते हैं?' हम ज्ञान के प्रकाश से जानते हैं। आप बुद्धि के प्रकाश से जानते हो। दोनों में प्रकाश तो है ही, लेकिन प्रकाश में फर्क है। आपकी जो बुद्धि है वह इन्डायरेक्ट (परोक्ष) प्रकाश है, जबकि हमारा ज्ञान वह डायरेक्ट (प्रत्यक्ष) प्रकाश है।

प्रश्नकर्ता : जिसे डायरेक्ट प्रकाश कहा है वही अबुधपन है? आप जो कहते हो कि हम में बुद्धि नहीं है...

दादाश्री : हाँ, वही अबुधपन है। डायरेक्ट प्रकाश! वही अबुधपन! क्योंकि वह प्रकाश अहंकार के श्रू (माध्यम द्वारा) आता है इसलिए बुद्धि कहते हैं और यदि अहंकार खत्म हो गया तो डायरेक्ट प्रकाश हो गया।

कितने ही जन्मों से जिसे ढूँढ़ रहा था, वह प्रकाश मिल गया। प्रकाश मिला इसलिए आनंद मिला और वह आनंद भी सीमा रहित है, असीम आनंद है, सनातन है।

अहंकार और बुद्धि, दोनों ही मुझ में नहीं हैं। बुद्धि हो तब तक अहंकार होता है। और बुद्धि हो तब तक ज्ञान लिमिटेड होता है, 'फ्रॉम दिस पॉइन्ट टु दिस पॉइन्ट (इस जगह से लेकर उस जगह तक)' वह लिमिटेड (मर्यादित) ज्ञान।

बिल्कुल भी क्रियाकारी नहीं होता। और मेरा ज्ञान अनलिमिटेड (अमर्यादित) है, जो ज्ञान क्रियाकारी है, ज्ञानप्रकाश क्रियाकारी है, केवलज्ञान स्वरूप है। पूरे ब्रह्मांड की सत्ता में पहुँचे ऐसा ज्ञान है।

संपूर्ण अबुध हो जाए तभी ज्ञानी कहलाते हैं। उन्हें वर्ल्ड में कोई भी चीज़ जानना बाकी नहीं रहता! परमात्मा भी जिनके वश में हो चुके हैं!

प्रश्नकर्ता : कोई चीज़ जानना बाकी नहीं रहे, वह क्या है?

दादाश्री : वह ज्ञान है, प्रकाश है और बुद्धि से तो बहुत दखल होता रहता है। (विपरीत) बुद्धि द्वारा जानने से तो लड़ाई-झगड़े होते हैं, मतभेद होते हैं सारे। प्रकाश में मतभेद नहीं होता, दखल नहीं होता, कुछ भी नहीं होता। जितनी भी रिलेटिव में आप आपत्ति उठाओगे, वह बुद्धिवाद है। हम में बुद्धिवाद नहीं है।

ज्ञानी पुरुष कैसे होने चाहिए? बुद्धि रहित होने चाहिए। मुझ में बुद्धि नहीं है इसीलिए मुझे सभी सॉल्यूशन (समाधान) मिल गए हैं। बुद्धि होगी तब तक पूरी तरह से सॉल्यूशन नहीं होगा। अर्थात् जहाँ पर बुद्धि नहीं होती वहाँ पर ज्ञान होगा और ज्ञान होगा वहाँ पर बुद्धि नहीं होती, दोनों में से एक ही रहता है।

(सूत्र-15)

यह अक्रल बहुत बढ़ जाए तो दिमाग़ ठिकाने नहीं रहता, बुद्ध बन जाता है, इसलिए बुद्धि को थोड़ा काट देना चाहिए। वाइज़ होने की ज़रूरत है, ओवरवाइज़ होने की ज़रूरत नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह पता चल जाता है, दादाजी जो कहना चाहते हैं वह समझ में आता है लेकिन फिर बुद्धि इतना अधिक तूफान मचाती है कि...

दादाश्री : बुद्धि तूफान मचाए तो तूफान, आप जानते हो न कि बुद्धि तूफान मचा रही है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस तरह जानपने में नहीं रह पाते, फिसल जाते हैं।

दादाश्री : वह जो फिसल जाते हो वह फिसलते नहीं हो, वह तो ऐसा लगता है।

प्रश्नकर्ता : लगता है लेकिन आप जैसा नहीं हो पाता।

दादाश्री : बुद्धि दखल देती ज़रूर है लेकिन बुद्धि को जानना चाहिए कि यह बुद्धि का दखल है। ऐसा समझ में नहीं आता आपको? आपके घर में कोई बहन आए, एक बेटा और एक बेटी हो तो आप समझ नहीं जाओगे कि यह बहन दखल दे रही है। आपको दखल को जानना चाहिए, और कुछ नहीं। दखल किसका है, आपको पता नहीं चलता?

प्रश्नकर्ता : बाद में ध्यान आ जाता है।

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं। वह तो आ ही जाता है, इसलिए इसमें कुछ होता नहीं है। अगर आप दखल को दखल के रूप में जानोगे न, तो फिर कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : बुद्धि उलझा देती है, वह क्या है?

दादाश्री : उलझनें, वह तो ओवरवाइज़नेस (ज्यादा अक्रलमंदी) है। ओवरवाइज़नेस अर्थात् क्या कि खुद की अक्रलमंदी से ही सारे काम करने जाता है। हर एक बात में वह खुद की अक्रलमंदी लगाता है। यों तो ज्ञानी के कहे अनुसार चलता है लेकिन फिर भी खुद की अक्रलमंदी लगाता है कि दवाई तीन बजे पीने को कहा है। अब सवा तीन बजे पी लूँगा तो क्या हर्ज है? यानी खुद

की अक्लमंदी लगाए बगैर रहता ही नहीं है। उसी वजह से ये सारी उलझनें हो जाती हैं।

व्यवहार में वाइज़ (समझदार) रहने की ज़रूरत है ताकि किसी को ज़रा सा भी नुकसान नहीं हो। इस अक्ल की ज़रूरत नहीं है। ओवरवाइज़ बन जाए तो फिर ट्रिक करना सीख जाता है। ट्रिक मतलब खुद की अधिक बुद्धि से सामने वाले की कम बुद्धि का फायदा उठाना वह। ट्रिक करे तब तो चोर में और तुझ में फर्क क्या? यह तो चोर से भी अधिक जोखिमदारी कहलाती है। ट्रिक, वह तो बुद्धि से सामने वाले को मारती है। भगवान ने कहा है कि, 'बुद्धि से मारते-मारते तू निर्दय बन जाएगा। इसके बजाय तो हाथ से मारना अच्छा कि जिससे कभी तो दया आएगी।' पूरा जगत् बुद्धि से मार रहा है, वह तो सब से बड़ा रौद्रध्यान कहलाता है।

(सूत्र-16)

बुद्धि आज की कमाई है, आज का 'एक्सपीरियन्स' है! जबकि अक्ल कुदरती देन है! जिनमें ज्यादा सूझ है, वे अक्लमंद कहलाते हैं। सूझ अधिक होना कुदरती देन है। किसी में सूझ अधिक होती है लेकिन बुद्धि न भी हो।

अपने यहाँ अक्ल को बुद्धि कहते हैं। अक्ल का मतलब क्या है? यह बच्चा फटाफट जवाब दे देता है और दूसरा एक बच्चा फटाफट जवाब नहीं दे पाता तो उसका क्या कारण है? इसमें अक्ल ज्यादा है और उसमें अक्ल कम है। यह अक्ल कुदरती बक्षिस है। वह आज की कमाई नहीं है। बुद्धि आज की कमाई है। आज का एक्सपीरियन्स (अनुभव) है जबकि अक्ल तो पूर्व जन्म की। अक्ल को मूल शब्दों में सूझ कहा जाता है।

हम तो अबुध हैं। और दूसरे किसी को अबुध कहोगे तो बुरा लगेगा। क्यों?

प्रश्नकर्ता : ज्ञान नहीं हो, तो ऐसा ही होगा न?

दादाश्री : नहीं! वे समझते हैं कि मैं बुद्धिशाली हूँ, तो फिर क्यों नहीं कहते? किसी भी व्यक्ति का नुकसान नहीं हो और खुद का भी किंचित्मात्र नुकसान न करे, वह बुद्धिशाली कहलाता है। बुद्धिशाली तो किसी के साथ दखल करके नहीं सोता। सब जगह से ताले बंद करके सोता है। उसे वकील की, डॉक्टर की, या किसी की भी ज़रूरत नहीं पड़ती। कभी भी किसी से मतभेद नहीं हो, तब समझना कि हम बुद्धिशाली हैं। यहाँ तो मतभेद होते हैं इसलिए टकराव होते हैं।

उसका व्यवहार इतना उच्च होता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए त्रासदायी नहीं होता। और किसी को त्रास हो जाए तो उसका भी हल ले आए, वह बुद्धिशाली। अन्य लोग अक्लमंद हो सकते हैं। अक्ल तो कुदरती बक्षिस है। और बुद्धि, वह खुद का अनुभव है। ज्यादा सूझ पड़ती है, वह अक्ल है। बुद्धिशाली का चेहरा कभी भी चढ़ा हुआ नहीं रहता, न ही चेहरा उतरा हुआ होता है। किसी को बहुत सूझ आ जाती है, तो उसे हम अक्लमंद कहते हैं। अक्लमंद अपने आपको बुद्धिशाली मानता है और ऐसे बुद्धिशाली व्यक्ति तो अपने आपको 'मैं हूँ, मैं हूँ' करते रहते हैं।

(सूत्र-17)

अब, सचमुच में बुद्धिशाली किसे कहते हैं? जो कलह बंद कर दे। कलह होने की जगह पर कलह बंद करता जाए। इसीलिए हमें पक्का कहा गया है न!

बुद्धि तो किसे कहते हैं कि एक भी मतभेद नहीं पड़ने दे। दिन भर दखलंदाजी होती रहती है वह बुद्धि की ही अक्लमंदी है न! बुद्धिशाली की तो किसी से दखलंदाजी ही नहीं होती।

बुद्धिशाली काम तो अच्छा कर सकता है लेकिन बुद्धि राइट साइड जाए तब। यह तो राइट साइड नहीं जाती और रोंग साइड पर ही घूमती रहती है। जिसकी बुद्धि राइट साइड गई हुई हो न, वह शुरू से ही घर में क्लेश नहीं रहने देगा। बुद्धि से उसका हिसाब लगा-लगाकर निकालता रहे तो क्लेश चला जाएगा। क्लेश निकालने के लिए ज्ञान की जरूरत नहीं है, वह तो बुद्धि से निकल जाता है। लेकिन सभी बुद्धिशालियों के वहाँ मैंने ज़रा ज़्यादा ही क्लेश देखे हैं। तब एक व्यक्ति ने मुझसे कहा कि, 'इसे क्या कहेंगे?' मैंने कहा, 'ये तो क्यूब (घन) कहे जाएँगे, घनचक्कर!' क्लेश निकलने की बजाय क्लेश बढ़ा आपके वहाँ? ऐसा नहीं होना चाहिए।

कोई भी बुद्धिशाली हो तो सब से पहले मैं पूछूँगा कि आपके घर में क्लेश है? और अगर महीने में एकाध दिन होता हो तो हर्ज नहीं है लेकिन... वह कहता है, 'वह तो चलते ही रहते हैं।' तब मैंने कहा, 'आप में बुद्धि है ही नहीं। बस इतना ही है कि आप अपने मन में मान बैठे हो।' आप अपने मन में मान लो कि यह मेरी सब्ज़ी-भाजी की दुकान है। अब वहाँ सड़े हुए बैंगन पड़े हो तो ऐसी सब्ज़ी कौन लेगा? ऐसा है यह सब। बुद्धि तो बहुत काम करती है, यदि स्ट्रेट वे (सीधा रास्ता) हो तो।

कृष्ण भगवान ने कहा है न, अव्यभिचारिणी बुद्धि, अर्थात् स्ट्रेट वे। उसकी लाइन में अन्य किसी का दखल नहीं होता और वह किसी में दखल नहीं करे ऐसी बुद्धि। आपको कैसी लगती है यह बात? समझना तो पड़ेगा ही न?

एक भाई तो बहुत बुद्धिशाली थे, तो मैंने यों ही उनसे पूछा कि 'घर में कोई क्लेश है?' 'क्लेश तो नहीं है लेकिन घर में बैठना अच्छा

नहीं लगता', ऐसा कहा। मैंने कहा, 'इतने अधिक बुद्धिशाली तो बुद्धि कहाँ गिरवी रखकर आया है या फिर क्या किया है?' बुद्धिशाली अक्लमंदी से रास्ता ढूँढ़ निकालते हैं। कल अगर पत्नी सामने बोली हो तो उसका उपाय ढूँढ़ निकालते हैं। फिर से अटैक नहीं होने देते। अटैक किस प्रकार से बंद हो ऐसा ढूँढ़ निकालते हैं। (खुद) सामने अटैक करके वापस नई लड़ाई नहीं करेगा। 'फिर से सामने अटैक करेगा तो जवाब दे ही दूँगा आखिर में!' ऐसा नहीं करते। स्त्री के सामने पुरुष का अटैक एक भयंकर गुनाह है।

मोक्ष में जाते हुए बुद्धि दखल देती है और संसार में बुद्धि उसे हेल्प करती है। वह भी नॉर्मेलिटी वाली बुद्धि होनी चाहिए। अतिरिक्त बुद्धि होगी न, तो पत्नी कहेगी, 'पूरे दिन कलह ही करते रहते हैं।' ऐसा कहेगी फिर। यानी ज़रूरत से ज़्यादा बुद्धिशाली हमेशा कलह ही करता रहता है। इसलिए ज़रूरत से ज़्यादा बुद्धिशाली के साथ तो लड़कियों को शादी ही नहीं करनी चाहिए। उन्हें कुँवारा रखना अच्छा।

अब, सचमुच में बुद्धिशाली किसे कहते हैं? जो कलह बंद कर दे। कलह होने की जगह पर कलह बंद करता जाए। इसीलिए हमें पक्का कहा गया है न! चाहे कैसी भी खराब परेशानी आई हो न, तब भी सारा निकाल कर देते हैं।

ये तो बुद्धि नहीं होती और मन में मान बैठे हैं कि मैं बुद्धिशाली हूँ! बुद्धि हो तो फिर पत्नी के साथ झगड़ा क्यों होता है भाई? पत्नी रूठ जाए तो सुबह में निकाल करना नहीं आता, उसके साथ फिर से बोलचाल शुरू करनी हो तो नहीं आता। तो भाई, इसे अक्ल कैसे कहेंगे? मैजिस्ट्रेट मुँह फुलाकर घूमता है और वे पटरानी भी मुँह फुलाकर घूमती हैं। वह तो मीनिंगलेस

(अर्थहीन) है! मैजिस्ट्रेट के घर अगर कोई वकील गया हो तो समझ जाता है।

बुद्धिशाली (सुलटी बुद्धि वाले) हमेशा क्या करते हैं? सेफसाइड करते हैं या अनसेफ करते हैं? सेफसाइड करते हैं न? ये तो यदि अनसेफ हों तो सेफसाइड करना तो आता ही नहीं है। और यहाँ के लोगों को बुद्धिशाली कहते हैं न, लेकिन यहाँ पर और क्या कहना चाहिए, वह पता ही नहीं है। इसलिए बुद्धिशाली कहते हैं। लेकिन वास्तव में वे अक्लमंद हैं।

(सूत्र-18)

अक्लमंद होते हैं न, उनके वहाँ सभी शांति से खाते-पीते हैं। कम हो तो कम और ज्यादा हो तो ज्यादा, अक्ल हो उनके वहाँ क्लेश नहीं होता।

जैसे उम्र बढ़ती जाती है वैसे खुद ऐसा जानता है कि मेरी भूल नहीं होती और बच्चों की बहुत भूलें होती हैं। खुद की भूलें बहुत होती हों मगर खुद ऐसा माने कि 'मेरी भूल नहीं होती', मानों न्यायाधीश न हो! बेटा फिर कहता भी है कि 'आप में अक्ल नहीं है' तब भी वह मन में विचार करता है कि बेटा अभी छोटा है, नासमझ है। अरे! वह कहता है तो ज़रा तौलकर तो देख! खुद में अक्ल है या नहीं यह तौलकर देखना। जब बेटा ऐसा कहता है तो क्या तौलना नहीं चाहिए कि 'मुझ में अक्ल नहीं है तो ज़रा तौलकर देख लूँ!' तब अंदर सोचे तो पता चले कि सच में अक्ल नहीं है। अक्ल होती तो ऐसा नहीं होता। अक्ल हो उसके वहाँ क्लेश नहीं होता।

अक्लमंद फिर 'अक्ल का बोरा' कहलाते हैं। पतंग को ऊँचे उड़ा सकते हैं, लेकिन क्या बुद्धि को उड़ा सकते हैं? वे तो 'अक्ल का बोरा'

कहलाते हैं। यहाँ इन्टेलिजेन्ट (बुद्धिशाली) आते हैं लेकिन कैसे इन्टेलिजेन्ट? यहाँ आए तो झाड़कर उसकी धूल निकाल दूँ।

बच्चों का अहंकार जागृत हो जाए, उसके बाद उन्हें कुछ नहीं कह सकते और हम कहें भी क्यों? उन्हें ठोकर लगेगी तो सीखेंगे। बच्चे पाँच साल के हों, तब तक उन्हें कहने की छूट। और पाँच से सोलह साल वाले बच्चे को शायद कभी थप्पड़ भी लगानी पड़े। लेकिन बीस साल का जवान होने के बाद ऐसा नहीं कर सकते। उसे एक अक्षर भी नहीं बोल सकते। उसे कुछ भी बोलना गुनाह होगा।

हमारी तरह 'अबुध' हो गया तो काम ही हो गया। बुद्धि का उपयोग किया तो संसार फिर खड़ा हो गया। घर में कोई पूछे तो ही हमें जवाब देना है और उस समय मन में यह हो कि 'यह न पूछे तो अच्छा' ऐसा हमें संकल्प रखना चाहिए क्योंकि न पूछे तो हमें यह दिमाग चलाना नहीं पड़ता। ऐसा है न, कि हमारे यह पुराने संस्कार सब खत्म हो गए हैं। यह दूषमकाल ज़बरदस्त फैला हुआ है, सारे संस्कार खत्म हो गए हैं। व्यक्ति को किसी को समझाना नहीं आता। पिता बेटे से कुछ कहे तो बेटा कहेगा, 'मुझे आपकी सलाह नहीं सुननी।' ऐसे में सलाह देने वाला कैसा और लेने वाला भी कैसा?

'बिन माँगी सलाह मत देना' ऐसा हमने लिखा भी है! अगर कोई आपसे कुछ पूछे, तब आपको सलाह देनी चाहिए और उस समय जो ठीक लगता हो वह कह देना। सलाह देने के बाद यह भी कहना कि आपको ठीक लगे वैसा करना। हमने तो आपको यह कह दिया। तब फिर उन्हें बुरा लगे ऐसी कोई बात नहीं रहती। अतः हमें जो कुछ भी करना है, उसके पीछे विनय रखना है।

इस काल में कम बोलने जैसी अच्छी बात और कुछ भी नहीं है। इस काल में बोल पत्थर लगें, ऐसे निकलते हैं और सबके ऐसे होते हैं। इसलिए बोलना कम कर देना अच्छा है। किसी को कुछ कहने जैसा नहीं है। कहने से और बिगड़ेंगे। यह तो खुद का गलत अहंकार है। जिस दिन से बच्चों के साथ आप किच-किच करना बंद करोगे, उस दिन से बच्चे सुधरने लगेंगे।

आप अपना फर्ज निभाएँ, और कुछ कहने जैसा नहीं है। कहने से फायदा नहीं, ऐसा आपको सार मिलता है? आप अपना आत्मधर्म क्यों चूक रहे हो? इन बच्चों के साथ तो रिलेटिव धर्म है। वहाँ माथापच्ची करने जैसी नहीं है, क्लेश करने के बजाय मौन रहना उत्तम होगा। क्लेश से तो खुद का और सामने वाले का भी दिमाग बिगड़ जाता है।

(सूत्र-19)

बुनियादी मतभेद हो तो मन अलग कर देता है। जहाँ एक-दूसरे की अक्ल ढूँढ़ने जाते हैं वहाँ बुनियादी मतभेद हो जाता है, वहाँ सावधानी रखनी होगी।

प्रश्नकर्ता : घर में मतभेद दूर करने के लिए क्या करें?

दादाश्री : मतभेद क्यों होते हैं, इसका पता लगाओ पहले। कभी ऐसा मतभेद होता है कि, एक लड़का और एक लड़की है, तो फिर दोनों लड़के क्यों नहीं, ऐसा मतभेद होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, वैसे तो छोटी-छोटी बातों में मतभेद होता है।

दादाश्री : अरे, छोटी बातों में तो, वह तो इगोइज्म (अहंकार) है। इसलिए, जब वह कहे कि 'ऐसा है', तब कहना, 'ठीक है।' ऐसा कहेंगे

तो फिर कुछ नहीं होगा। लेकिन हम फिर अपनी अक्ल बीच में लाते हैं। अक्ल से अक्ल लड़ती है, इसलिए मतभेद होता है।

प्रश्नकर्ता : 'यह ठीक है' ऐसा मुँह से बोलने के लिए क्या करना चाहिए? ऐसा बोल नहीं पाते, इस अहम् को कैसे दूर करें?

दादाश्री : ऐसा बोल नहीं पाते, सही कहते हैं। इसके लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करनी पड़ेगी। यह जो मैं कह रहा हूँ, वह उपाय करने के लिए थोड़े दिन प्रैक्टिस करो न! फिर वह फिट हो जाएगा, एकदम से नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : मतभेद क्यों होते हैं? इसकी वजह क्या है?

दादाश्री : मतभेद होता है, तब यह समझता है कि मैं अक्लमंद और वह समझती है कि मैं अक्लमंद। वे अक्ल के बारदान आए! बेचने जाएँ तो चार आने भी नहीं आते, अक्ल के बारदान (खाली बोरे) कहते हैं उसे। इसके बजाय हम सयाने हो जाएँ, उसकी अक्ल को हम देखा करें कि अहोहो... कैसी अक्लमंद है! तब वह भी ठंडी पड़ जाएगी। लेकिन हम भी अक्लमंद और वह भी अक्लमंद, अक्ल ही जहाँ लड़ने लगे, वहाँ क्या होगा फिर?

और अक्लमंद मैंने देखा नहीं कहीं भी। अक्लमंद किसे कहते हैं कि जो कभी किसी की नकल नहीं करता, उसे अक्लमंद कहते हैं। ये सब तो नकली लोग हैं। मैं देख-देखकर सीखा हूँ, कहेंगे। इन बहनों को नकल करके, कढ़ी बनाना आया है, देखकर सीख गए। ये साड़ी भी दूसरों की देखकर लाई हैं और फिर कहेगी, मैं अक्लमंद हूँ!

मैंने मेरी जिंदगी में कभी भी नकल नहीं

की है, असल ही। मुझे अनुकूल आता है, वही करता हूँ। और कोई झंझट नहीं, मैं कहाँ सीखूँ आपकी पार्टी का? आपका ड्रोइंग बासी हो और फिर मैं भी मेरा वही चित्रन करूँ, तो फिर मेरा भी बासी हो जाएगा। यह मेरा किसी के साथ मतभेद नहीं होता क्योंकि मुझे में अक्ल नहीं है न! अक्ल का बोरा बहुत मतभेद करता है। ज्यादा अक्लमंद होते हैं न, वे बहुत मतभेद करते हैं। तुझ में अक्ल है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : पता नहीं।

दादाश्री : लेकिन आपके मतभेद होते हैं न? इसलिए अक्लमंद हो। ये तो कभी ऐसा भी सुना देती है, 'शादी हुई तभी से आप में अक्ल कम है।' अरे, छोड़ न ये। अक्ल कम है वह जानते हैं, तो अब बगैर काम के बोलते रहने की क्या जरूरत है? कैसा अक्ल का बोरा! आप अक्ल के बोरे!

आपको तो वह अक्ल की बातें कर रही हो न, तो आपको तो हँसना चाहिए तो वह समझ जाती है कि यह मेरी मजाक होने लगी है तो चुप हो जाएगी, बाद में। आपको आमने-सामने नहीं लड़ना है। यह सच है, वह सच है, ऐसा बोलती हो न, तो आप जानना कि यह अक्ल चली अब। तो आप थोड़ा हँसना तो अपने आप चुप हो जाएगी, एकदम चुप!

बाकी, घर में मतभेद नहीं करने चाहिए। मतभेद होते हों, उसे मनुष्य ही कैसे कह सकते हैं? यदि मतभेद टालना नहीं आता, तो बुद्धि ही नहीं कह सकते न! मतभेद हो, ऐसी बातें हो रही हों तो आपको उसे बदल देना है। मतभेद क्यों होने चाहिए?

मतभेद तो बुद्धि और समझ से तोड़े जा

सकते हैं। मतभेद न हो ऐसी जागृति तो प्रकृति गुण से भी आ सकती है। मति नहीं पहुँच पाती, इसलिए मतभेद होते हैं। मति 'फूल' पहुँच पाती तो मतभेद नहीं होते। लेकिन इस काल की वजह से अब सब फ्रेक्चर हो गया है और भटक, भटक, भटक करते हैं। कोई हेतु नहीं है, कोई भान नहीं है, कुछ भी नहीं है। वैसे भी घर में किसी के साथ सुख नहीं है उसे और घर वालों को भी सुख नहीं उसके साथ। और मतभेद कम नहीं हुए हैं। वह कहता है, मैंने कुछ पाया है! अरे, मतभेद कम होने चाहिए, शांति बढ़नी चाहिए। कुछ तो कारण होना चाहिए। कुछ नहीं हुआ है और मन में क्या ही मानकर बैठे हैं! जाना उसे कहते हैं कि किसी के साथ मतभेद न हो।

प्रश्नकर्ता : जीवन में मतभेद तो होते हैं न, कोई भी व्यक्ति पूर्ण तो है ही नहीं न?

दादाश्री : मतभेद पड़ते हैं उसका अर्थ ही क्या है? वह सेन्सलेस फेलो (मूर्ख व्यक्ति) है! मतभेद तो एक या दो होते हैं, ये तो पूरे दिन मतभेद पड़ते रहते हैं! वह तो सेन्सलेस फेलो कहलाता है!

(सूत्र-20)

अक्लमंद तो 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल' वाला होता है। कॉमनसेन्स' वाला व्यक्ति 'एवरीव्हेर एडजस्टेबल' होता है। थ्योरीटिकल एज़ वेल एज़ प्रैक्टिकल'!

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ प्रिन्सिपल (सिद्धांत) होने ही चाहिए। फिर भी संयोगानुसार वर्तन करना चाहिए। संयोगों के साथ एडजस्ट हो जाए, उसे मनुष्य कहते हैं। यदि प्रत्येक संयोग में एडजस्टमेन्ट लेना आ जाए तो पूर्ण तक मोक्ष में पहुँचा जा सके, ऐसा ग़ज़ब का हथियार है।

व्यवहार निभाना किसे कहेंगे कि जो 'एडजस्ट एवरीव्हेर' हो जाए! अब डेवेलपमेन्ट का ज़माना आया है। मतभेद नहीं होने देना! कहीं पर खुद परेशानी में आ जाए तब वह खुद का 'एडजस्टमेन्ट' कर ले तब भी संसार अच्छा लगेगा। एडजस्ट होना वही धर्म है। एडजस्टमेन्ट तो, तेरे साथ जो-जो डिसएडजस्ट होने आए, उसके साथ तू एडजस्ट हो जा। दैनिक जीवन में यदि सास-बहू के बीच या देवरानी-जेठानी के बीच डिसएडजस्टमेन्ट होता हो, तो जिसे इस संसार के घटनाचक्र से छूटना हो उसे एडजस्ट हो ही जाना चाहिए। पति-पत्नी में से यदि कोई एक दरार डाले, तो दूसरे को जोड़ लेना चाहिए, तभी संबंध निभेगा और शांति रहेगी। जिसे एडजस्टमेन्ट लेना नहीं आता, उसे लोग मेन्टल कहते हैं। इस रिलेटिव सत्य में आग्रह, ज़िद करने की ज़रा सी भी ज़रूरत नहीं है। 'मनुष्य' तो किसे कहते हैं कि 'जो एवरीव्हेर एडजस्टेबल हो जाए।' चोर के साथ भी एडजस्ट हो जाना चाहिए।

अक्रलमंद कौन कहलाता है? वह जो किसी को भी दुःख नहीं पहुँचाए और यदि कोई उसे दुःख पहुँचाए, तो उसे जमा कर ले। सभी को सारा दिन ऑब्लाइज (उपकार) करता रहे। सुबह उठते ही उसका लक्ष्य यही हो कि मैं कैसे लोगों को हेल्पफुल हो सकूँ, ऐसा जिसे लगातार रहा करे, वह मानव कहलाता है। उसे फिर आगे चलकर मोक्ष की राह भी मिल जाती है।

संसार में और कुछ नहीं आए तो हर्ज नहीं, लेकिन 'एडजस्ट' होना तो आना ही चाहिए। सामने वाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे, लेकिन आप 'एडजस्ट' होते रहो, तो संसार तैरकर पार उतर जाओगे। जिसे दूसरों को अनुकूल होना आया, उसे कोई दुःख ही नहीं रहता। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'!

'कॉमनसेन्स' वाला व्यक्ति 'एवरीव्हेर एडजस्टेबल' होता है। कोई गालियाँ दे तो उसके साथ भी 'एडजस्ट' होकर कहेगा, 'आइए, आइए, बैठिए न! कोई बात नहीं।' यानी, 'कॉमनसेन्स' की ज़रूरत पड़ेगी। जबकि यहाँ तो, 'बेअक्रल हो,' ऐसा कहते ही मुँह फूल जाता है। अरे, कॉमनसेन्स नहीं है? तेरा मुँह किसलिए फूल गया इसमें? 'अक्रलमंद हूँ' ऐसा अपने आपको मान बैठा है तू? देखो अक्रल का बोरा! ये आए बड़े अक्रल के बोरे! बेचने जाएँ तो चार आने भी नहीं आएँ। और बेकार ही अकड़ता रहता है। अक्रलमंद तो 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल' वाला होता है। इस काल में तो 'कॉमनसेन्स' मुश्किल हो गया है। इस 'कॉमनसेन्स' का अर्थ हमने कहा है न, कि 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल, थ्योरीटिकल एज़ वेल एज़ प्रैक्टिकल,' यह सुनकर लोग बहुत खुश हो जाते हैं। 'कॉमनसेन्स का बहुत सुंदर अर्थ निकाला' कहते हैं।

(सूत्र-21)

अक्रल (बुद्धि) का पाँच साल तक न माने, तो वह चली जाती है। विरोध करें तो चली जाती है।

यह सभी दान देते हैं न, यह देखकर मुझे तो आश्चर्य होता है! मैं अपने आपको परखूँ या न परखूँ? मैं भले ही अभी ज्ञानी हो गया, लेकिन उस दिन क्या मैं ज्ञानी था? और अभी देने वाले लोग, उन्हें देखता हूँ, तब मुझे आश्चर्य होता है कि अहोहो! ये कैसे और इनका मन कैसा और मेरा मन कैसा! और उससे भी कोई खास नतीजा नहीं निकला। काम नहीं आया कुछ भी! ऊपर से मुश्किल हुई वह तो।

यह तो मूर्खता ही है, यह सारी फूलिशनेस है! अक्रल लड़ाता है, अक्रल! अक्रल (दान) देने ही नहीं देती, मुई!

प्रश्नकर्ता : उसे निकालना कैसे, दूर कैसे करना है ऐसी अकल को?

दादाश्री : वह नहीं जाती, जाती भी नहीं वह तो।

प्रश्नकर्ता : फिर तो क्या करें ऐसे में? वह अड़चन करती रहती है, अब उसका क्या करें?

दादाश्री : अकल का पाँच साल तक न माने, तो वह चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : पाँच साल न माने तो?

दादाश्री : हाँ। उसका अवरोध करें, विरोध करें तो चली जाती है। हमारी चली गई, हम में बिल्कुल अकल नहीं है अभी। अब अकल ज़रा भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : दादा, वह आपकी तो ज्ञान से गई न?

दादाश्री : हाँ, वह तो ज्ञान से चली गई।

प्रश्नकर्ता : दादा, हमारी तो अकल बढ़ती जा रही है।

दादाश्री : वह तो फिर धीरे-धीरे कम हो जाएगी।

(सूत्र-22)

अकल का युद्ध है, अकल की मारामारी है। अकल रहित हो जाना अच्छा। उस युद्ध में फिर क्यों पड़ें? हम तो सरल हैं। दोबारा भी ठगे जाना है, उससे तो पहले ही ठग लें तो अच्छा।

हमारे मन में दुःख कब होता है? जब हमें मन में ऐसा लगे कि यह मुझे (मूर्ख) बना जाता है। अरे भाई, वह खुद ही (मूर्ख) बनता है! यह हमारी एक तरह की भ्रांति है कि मुझे (मूर्ख)

बना जाता है। वह अकल का युद्ध है वहाँ। उस युद्ध में उतरना नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, अकल का युद्ध है।

दादाश्री : हाँ, वह अकल का युद्ध है, अकल की मारामारी। अकल रहित हो जाना वह अच्छा। उस युद्ध में फिर क्यों पड़ें? हम तो सरल हैं। दोबारा भी ठगे जाना है, उससे तो पहले ही ठग ले तो अच्छा।

यह तो जान-बूझकर, ज्ञान में रहकर शुद्धात्मभाव से फिर से ठगे जाना है। टाइम वेस्ट नहीं करना है, फाइल का निकाल करना है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमें कोई (मूर्ख) बनाता रहे तो क्या करें?

दादाश्री : तो बनना है आपको। वह बनना बहुत अच्छा है। उसके जैसा कुछ भी नहीं। मुझे कोई नहीं बनाता। मुझे तो बहुत पसंद है। मैं जानता हूँ कि उसकी अकल को भी धन्य है!

प्रश्नकर्ता : आप भगवान हैं, आपको कैसे से बनाया जा सकता है?

दादाश्री : वह तो बनाते हैं, फिर भी बनाते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं बनाया जा सकता।

दादाश्री : नहीं बना, बनता नहीं हूँ, लेकिन कभी कोई हो तो बाद में बनाता है, मेरे सामने नहीं करता। बना तो देते हैं फिर भी! इन लोगों में सभी प्रकार के हैं। ऐसा कोई प्रकार नहीं है जिनमें ये लोग उपस्थित न हों, सभी प्रकार के हैं।

प्रश्नकर्ता : देवरानी-जेठानी बना जाएँ तो क्या करना है? बनने देना है न?

दादाश्री : अंदर से खुश हो जाना है हमें,

कि बहुत अच्छा! सौभाग्य हमारा कि हमें बनाने वाली जेठानी मिली! अपने आपको सौभाग्यशाली मानना।

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : और इस दुनिया में ठगे जाने जैसा बड़े से बड़ा उपकार कोई नहीं है। वह तो सब से ऊँची चीज़ है। लोग ठगें, वह तो बहुत बड़ी बात है, उस दिन आभार मानना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : फिर तो वह रोज़ ठगता ही रहेगा हमें।

दादाश्री : भले ही ठगने दो! अच्छा है, ठगता रहे तो।

प्रश्नकर्ता : और हमें हँसते रहना है।

दादाश्री : हमें भगवान की तरफ... मोक्ष में भेज देता है वह ठगने वाला।

प्रश्नकर्ता : ऐसा है?

दादाश्री : हाँ। इसलिए आपको तो ठगने वाले मिलते रहेंगे। आपको तो मोक्ष में भेजने वाले हैं ये लोग। ठगने वाले का तो आभार मानना चाहिए हमें।

(सूत्र-23)

इस दुनिया में जो ठगा जाए, जान-बूझकर ठगा जाए, उसके जैसा पक्का (निरंतर आत्मस्वरूप में रहने वाले) इस जगत में कोई है ही नहीं, और जो जान-बूझकर ठगे गए, वे वीतराग हुए।

वीतराग कोई कच्ची माया नहीं है। सभी कच्चे होंगे, लेकिन वीतराग जैसे पक्के कोई नहीं हैं, वे तो असल में पक्के हैं! सारी दुनिया के सभी अक्लमंद उन्हें क्या कहते थे? 'भोला' कहते थे।

इन वीतरागों का जन्म हुआ न, तब उनके दोस्त उन्हें कहते थे कि, 'ये तो भोले हैं, मूर्ख हैं।' वीतरागों को तो कोई मूर्ख बना ही नहीं सकता, वे इतने समझदार होते हैं। खुद का रास्ता नहीं छोड़ते हैं। वे खुद धोखा खा जाते हैं, लेकिन रास्ता नहीं चूकते। वे कहेंगे कि, 'मैं धोखा नहीं खाऊँगा, तो यह मुझे मेरे रास्ते पर नहीं जाने देगा।' तो सामने वाला क्या समझता है कि ये कच्चे हैं। अरे, नहीं हैं ये कच्चे, ये तो असल पक्के हैं!

प्रश्नकर्ता : ठगे जाकर भी रास्ता नहीं चूकते।

दादाश्री : वे कहेंगे, अगर मैं ठगा नहीं जाऊँगा, तो यह मुझे मेरे रास्ते जाने नहीं देगा। वे कैसे पक्के हैं! इसलिए ठगे जाकर भी वे अपना रास्ता नहीं चूकते। सामने वाला क्या मानता है कि यह कच्चा है, अरे! कच्चा नहीं है, असल पक्का है!

प्रश्नकर्ता : वीतरागों की यह एक पक्काई आपने बताई, अब और किन-किन जगहों पर वीतरागों की पक्काई होती है?

दादाश्री : अपने होम डिपार्टमेंट (आत्मस्वरूप) से बाहर न निकलना, यही उनकी पक्काई है! और बाहर का लुट रहा हो तो लुटने दें, वहाँ पक्काई नहीं है। जहाँ इन लोगों को पक्काई है, वहाँ उनकी पक्काई है ही नहीं। बाहर का लुटता हो तो लुटने दें, लेकिन अपने घर (आत्मा) में लुटने नहीं देना। दुनिया के लोग अपने घर का लुटाकर बाहर का लुटने नहीं देते। क्या करते हो? ऐसा आप कहो तो आपको मारने दौड़ पड़ेंगे। 'हम अपने घर का लुटाएँ? हम कोई पागल हैं क्या?' कहेंगे। ये (वीतराग) क्या कहना चाहते हैं, यह समझ में ही नहीं आता न! जो पुद्गल में पक्के हैं, वे पक्के कहलाते ही नहीं। पुद्गल में पक्के, वही कच्चे!

इसलिए जिसे अभी भी वीतराग होना हो, वे जान-बूझकर धोखा खाएँ। अनजाने में तो पूरी दुनिया धोखा खा रही है। साधु, संन्यासी, बाबा हर कोई धोखा खा रहा है, लेकिन जान-बूझकर धोखा खाए, वे सिर्फ ये वीतराग ही हैं! बचपन से जान-बूझकर हर तरफ से धोखा खाते रहते हैं, वे खुद जान-बूझकर धोखा खाते हैं फिर भी धोखा देने वाले को ऐसा नहीं लगने देते कि तूने मुझे धोखा दिया है, नहीं तो मेरी आँख तू पढ़ लेगा। वे तो आँख में भी नहीं पढ़ने देते, वीतराग ऐसे पक्के होते हैं! वे जानते हैं कि इसका पुद्गल का व्यापार है, उस बेचारे को तो पुद्गल लेने दो न! मुझे तो पुद्गल दे देना है! लोभी हो तो उसे लोभ करने देते, मानी हो तो उसे मान देकर भी खुद का हल निकाल लेते थे, खुद का रास्ता नहीं चूकते थे। खुद का मूल मार्ग जो प्राप्त हुआ है उसे चूकते नहीं थे, वीतराग ऐसे समझदार थे। और अभी भी जो भी ऐसा मार्ग पकड़ेगा उसके मोक्ष में परेशानी ही क्या आएगी? 'ज्ञानी पुरुष' का तो आज यह शरीर है और कल यह बुलबुला फूट जाएगा तो क्या मोक्षमार्ग खत्म हो जाएगा? तब कहे, 'नहीं, अगर इतनी शर्तें होंगी कि जिसे मोक्ष के अलावा अन्य किसी भी प्रकार की कामना नहीं है और जिसे खुद जान-बूझकर धोखा खाना है, यदि ऐसे कुछ लक्षण उसमें खुद में होंगे न, तो उसका मोक्ष कोई रोकने वाला नहीं है। यों ही, अकेला ही, ज्ञानी के बिना भी दो अवतारी होकर वह मोक्ष में चला जाएगा!'

(सूत्र-24)

व्यवहार में अक्रल का उपयोग हो तो ज्ञान में दखल हुए बगैर रहता नहीं है। व्यवहार तो ज्ञान से, पाँच आज्ञापूर्वक करना है। हमारा बिना अक्रल के चलता है या नहीं चलता? सब चलता है।

दादाश्री : यह ज्ञान मिला है तो कभी न कभी तो दिन बदलेगा।

प्रश्नकर्ता : यह 'अक्रम विज्ञान' इटसेल्फ क्रियाकारी है न?

दादाश्री : अपने आप ही काम करता रहता है। खुद जान-बूझकर आड़ई करे तो बिगड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : इसका क्रियाकारी होना स्वाभाविक रूप से होता रहता है?

दादाश्री : यदि हम दखल नहीं दें, तो।

प्रश्नकर्ता : दखल किस तरह से दे देता है खुद?

दादाश्री : खुद की अक्रल का उपयोग करता है फिर। जो अक्रल बेचने योग्य थी उसे अभी भी रखी हुई है। क्यों रखी हुई है? तो कहते हैं, अभी तो भाव बढ़ेंगे, इसलिए। तू काम में नहीं लेता अक्रल?

प्रश्नकर्ता : अक्रल किस तरह काम में लेता है?

दादाश्री : ऐसा करेंगे तो फायदा है और ऐसा करेंगे तो फायदा नहीं है। उसमें अक्रल काम आती है।

प्रश्नकर्ता : यह अक्रल तो व्यवहार में काम आई न। यहाँ ज्ञान में किस तरह से अक्रल काम में आती है? ज्ञान में किस तरह दखल होता है?

दादाश्री : व्यवहार में अक्रल का उपयोग हो तो ज्ञान में दखल हुए बगैर रहता नहीं है। व्यवहार तो ज्ञान से, पाँच आज्ञापूर्वक करना है। हमारा बिना अक्रल के चलता है या नहीं चलता? सब चलता है।

जय सच्चिदानंद

मतभेद में समाधान किस प्रकार?

काल विचित्र आ रहा है। आँधियों पर आँधियाँ आनेवाली हैं! इसलिए सावधान रहना। ये जैसे पवन की आँधियाँ आती हैं न वैसे कुदरत की आँधी आ रही है। मनुष्यों के सिर पर भारी मुश्किलें हैं। शकरकंद भट्टी में भुनता है, वैसे लोग भुन रहे हैं। किसके आधार पर जी रहे हैं, उसकी खुद को भी समझ नहीं है। अपने आपमें से श्रद्धा भी चली गई है! अब क्या हो? घर में वाइफ के साथ मतभेद हो जाए तो उसका समाधान करना नहीं आता, बच्चों के साथ मतभेद खड़ा हो जाए तो उसका समाधान करना आता नहीं और उलझन में रहता है।

प्रश्नकर्ता : पति तो ऐसा ही कहता है न कि वाइफ समाधान करे, मैं नहीं करूँगा।

दादाश्री : हं... यानी कि लिमिट पूरी हो गई। वाइफ समाधान करे और समाधान न करो तो आपकी लिमिट हो गई पूरी। खरा पुरुष हो न तो वह ऐसा बोले कि वाइफ खुश हो जाए और ऐसे करके गाड़ी आगे बढ़ाए। और आप तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक, महीनों तक गाड़ी खड़ी रखते हो, ऐसा नहीं चलेगा। जब तक सामनेवाले का मन का समाधान नहीं होगा तब तक आपको मुश्किल है। इसीलिए समाधान करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान हो गया, ऐसा किस तरह कहा जाएगा? सामनेवाले का समाधान हो जाए, लेकिन उसमें उसका अहित हो तो?

दादाश्री : वह आपको देखना नहीं है। यदि सामनेवाले का अहित हो, तो वह सामनेवाले को देखना है। आपको सामनेवाले का हिताहित देखना है, लेकिन आप में, हित देखनेवाले में, आप में शक्ति क्या है? आप अपना ही हित नहीं देख सकते, फिर दूसरे का हित क्या देखते हो? सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार हित देखते हैं, उतना हित देखना चाहिए। लेकिन सामनेवाले के हित की खातिर टकराव खड़ा हो, ऐसा नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले का समाधान करने का हम प्रयत्न करें, लेकिन उसमें परिणाम अलग ही आनेवाला है, ऐसा हमें पता हो तो उसका क्या करना चाहिए?

दादाश्री : परिणाम कुछ भी आए, आपको तो 'सामनेवाले का समाधान करना है' इतना निश्चित रखना है। समभाव से निकाल करने का निश्चित करो, फिर निकाल हो या न हो वह पहले से देखना नहीं है। और निकाल होगा। आज नहीं तो दूसरे दिन होगा, तीसरे दिन होगा, गाढ़ा हो तो दो वर्ष में, तीन वर्ष में या चार वर्ष में होगा। वाइफ के ऋणानुबंध बहुत गाढ़ होते हैं, बच्चों के गाढ़ होते हैं, माँ-बाप के गाढ़ होते हैं, वहाँ ज़रा ज़्यादा समय लगता है। ये सब अपने साथ में ही होते हैं, वहाँ निकाल धीरे-धीरे होता है। लेकिन हमने निश्चित किया है कि कभी न कभी 'हमें समभाव से निकाल करना ही है', इसलिए एक दिन उसका निकाल होकर रहेगा, उसका

अंत आएगा। जहाँ गाढ़ ऋणानुबंध हों, वहाँ बहुत जागृति रखनी पड़ती है, इतना छोटा-सा साँप हो लेकिन सावधान, और सावधान ही रहना पड़ता है। और यदि बेखबर रहेंगे, अजागृत रहेंगे तो समाधान नहीं होगा। सामनेवाला व्यक्ति बोल जाए और आप भी बोलो, बोल लिया उसमें हर्ज नहीं है परंतु बोलने के पीछे ऐसा निश्चय है कि 'समभाव से निकाल करना है' इसलिए आपको द्वेष नहीं रहता। बोला जाना, वह पुद्गल का है और द्वेष रहना, उसके पीछे खुद का आधार है। इसलिए 'हमें तो समभाव से निकाल करना है', ऐसे निश्चित करके काम करते जाओ, हिसाब चुकता हो ही जाएँगे। और आज माँगनेवाले को नहीं दे पाए तो कल दिया जाएगा, होली पर दिया जाएगा, नहीं तो दिपावली पर दिया जाएगा। लेकिन माँगनेवाला ले ही जाएगा।

इस जगत् के लोग हिसाब चुकाने के बाद अर्थी में जाते हैं। इस जन्म के तो चुका ही देता है, किसी भी तरह से, और फिर नये बाँधता है वे अलग। अब हम नये बाँधते नहीं है और पुराने इस भव में चुकता हो ही जानेवाले हैं। सारा हिसाब चुकता हो गया इसलिए भाई चले अर्थी लेकर! जहाँ किसी भी खाते में बाकी रहा हो, वहाँ थोड़े दिन अधिक रहना पड़ेगा। इस भव का इस देह के आधार पर सब चुकता हो ही जाता है। फिर यहाँ जितनी गाँठें डाली हों, वे साथ में ले जाता है और फिर वापस नया हिसाब शुरू होता है।

इसलिए जहाँ हो वहाँ से टकराव को टालो। यह टकराव करके इस लोक का तो बिगाड़ते हैं परंतु परलोक भी बिगाड़ते हैं! जो इस लोक का बिगाड़ता है, वह परलोक का बिगाड़े बिना रहता ही नहीं! जिसका यह लोक सुधरे, उसका परलोक सुधरता है। इस भव में आपको किसी भी प्रकार की अड़चन नहीं आई तो समझना कि परभव में भी अड़चन है ही नहीं और अगर यहाँ अड़चन खड़ी की तो वे सब वहीं पर आनेवाली हैं।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- ✦ 'साधना' पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश' पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दीमें)
- ✦ 'दूरदर्शन सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह 7 से 7-45 (मराठीमें)
- ✦ 'आस्था कन्नड़ा' पर हर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'दूरदर्शन चंदना' पर हर रोज शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ामें)
- ✦ 'दूरदर्शन गिरनार' पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- ✦ 'वालम' पर हर रोज शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)
- ✦ 'धर्म संदेश' पर हर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

वलसाड

2 नवम्बर (सोम) शाम 6-30 से 8-30 - आप्तपुत्र सत्संग

3 नवम्बर (मंगल) शाम 5-30 से 9 - ज्ञानविधि

स्थल : श्री ओधव भवन, धरमपुर चोकडी के पास, NH 48, वलसाड. संपर्क : 9274291671

3 नवम्बर (मंगल) सुबह 10-30 से 12 - वलसाड त्रिमंदिर का भूमि पूजन

स्थल : गुंडलाव चोकडी के पास, नंदवाला गाँव, NH 48, वलसाड. संपर्क : 9274291671

अडालज

8 नवम्बर (रवि) - रात 8-30 से 10-30 दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति

10 नवम्बर (मंगल) - नूतन वर्ष (वि. सं. 2083) के अवसर पर विशेष कार्यक्रम

15 नवम्बर (रवि) - शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि

26 दिसम्बर से 2 जनवरी - आप्तवाणी 14 भाग-5 पर सत्संग पारायण

2 जनवरी - परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

3 जनवरी - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

आणंद में परम पूज्य दादा भगवान का 119वाँ जन्मजयंती महोत्सव

19 नवम्बर (गुरु) - शाम 5-30 से 7 - महोत्सव शुभारंभ (सांस्कृतिक कार्यक्रम)

- शाम 7-15 से 8-15 - सत्संग

20 नवम्बर (शुक्र) - सुबह 10 से 12-30 और शाम 6 से 8-30 - सत्संग

- शाम 4 से 5 - स्वरूप कीर्तन भक्ति

21 नवम्बर (शनि) - सुबह 10 से 12-30 और शाम 6 से 8-30 - सत्संग

- शाम 4 से 5 - आप्तपुत्र सत्संग

22 नवम्बर (रवि) - सुबह 10 से 12-30 - सत्संग और शाम 4-30 से 8 - ज्ञानविधि

23 नवम्बर (सोम) - सुबह 8 से 9-30 - जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-संदेश-आरती

- सुबह 10-30 से 1 और शाम 5 से 6 (पूज्यश्री के कार द्रष्टि दर्शन)

स्थल : आणंद-सोजीत्रा रोड, मोरड-वलासण केनाल के पास, आणंद, गुजरात. संपर्क : 9998339150

सूचना : रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। रजिस्ट्रेशन की अधिक जानकारी Akonnect ऐप पर उपलब्ध है।

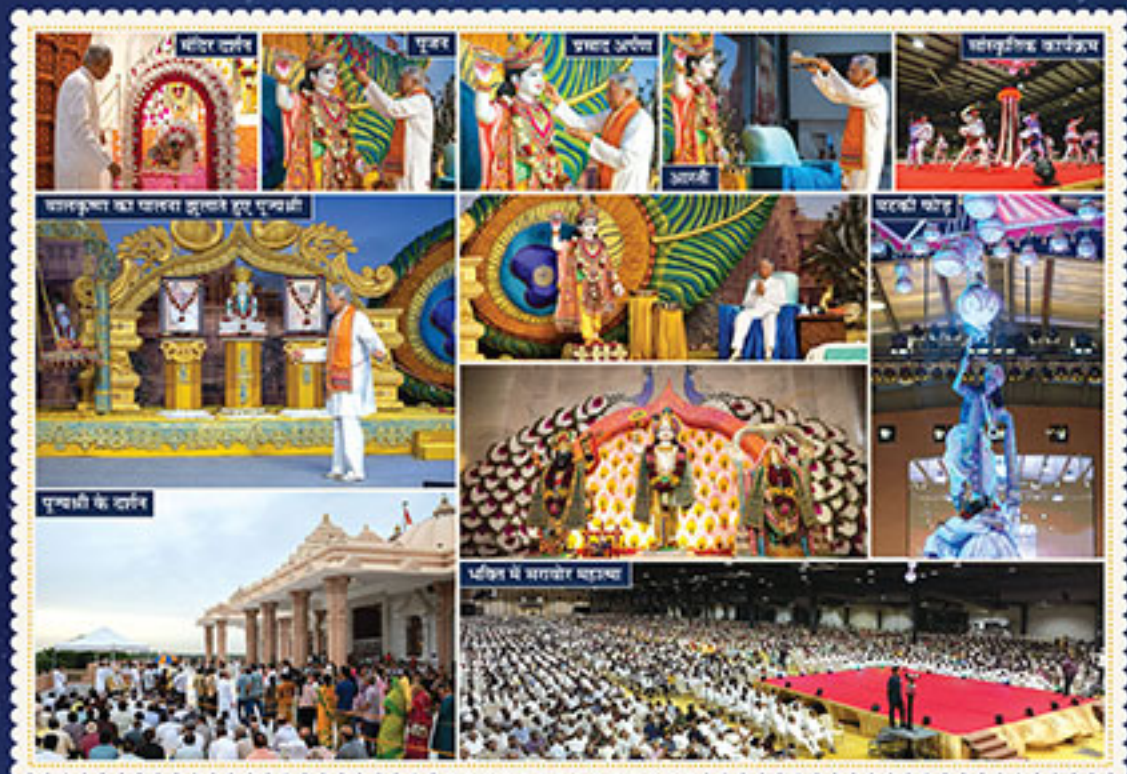
राजकोट

8 दिसम्बर (मंगल) - सत्संग और 9 दिसम्बर (बुध) - ज्ञानविधि

नोट : समय और स्थल की जानकारी अगले अंक में दी जाएगी.

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज: 9328661166-77, राजकोट : 9924343478, भूज : 9924345588, मुंबई : 9323528901, अंजार : 9924346622, मोरबी : 9924341188, सुरेन्द्रनगर : 9737048322, अमरेली : 9924344460, वडोदरा : 9574001557, गोधरा : 9723707738, जामनगर : 9924343687, भावनगर : 9313882288, अहमदाबाद (दादा दर्शन) : 9574001445, वडोदरा (दादा मंदिर) : 9924343335, दिल्ली : 9810098564, बैंगलूर : 9590979099, कोलकता : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, यु.के.: +44 330-111-3232, ऑस्ट्रेलिया: +61 402179706

अडालज : जन्माष्टमी महोत्सव : ता. 4 सितम्बर 2026



अडालज : पर्युषण पारायण : ता. 8 से 15 सितम्बर 2026



सचमुच में बुद्धिशाली किसे कहते हैं ?

किसी भी व्यक्ति का नुकसान नहीं हो और खुद का भी किंचित्मात्र नुकसान न करे, वह बुद्धिशाली कहलाता है। बुद्धिशाली तो किसी के साथ दखल करके नहीं सोता। सब जगह से ताले बंद करके सोता है। उसे वकील की, डॉक्टर की या किसी की भी जरूरत नहीं पड़ती। कभी भी किसी से मतभेद नहीं हो, तब समझना कि हम बुद्धिशाली हैं। यहाँ तो मतभेद होते हैं इसलिए टकराव होते हैं। उसका व्यवहार इतना उच्च होता है कि किसी भी व्यक्ति के लिए त्रासदायी नहीं होता और किसी को त्रास रूप हो जाए तो उसका भी हल ले आए, वह बुद्धिशाली है। अक्सर, वह कुदरती बखिस है और बुद्धि, वह खुद का अनुभव है।

- दादाश्री

